श्रव्य काव्य—वह काव्य जिसका आनन्द पठन-पाठन से लिया जाता है, उसे श्रव्य काव्य कहते हैं।

पिंगल—कविता में व्याकरण के नियमों को पिंगल कहते है।

डिंगल—राजस्थान की साहित्यिक भाषा डिंगल कहलाती है।

कवि—भावनाओं को काव्य का स्वरूप देने वाला व्यक्ति कवि है।

महाकवि—युग के प्रतिनिधि कवि को महाकवि कहते है, इसी प्रकार महाकाव्य की रचना करने वाला भी महाकवि कहलाता है।

राज्यकवि—जो कवि किसी राजा के आश्रित रह कर उसको प्रसन्न करने के लिये कविता किया करता है, उसे राजकवि कहते है।

राष्ट्रकवि—अपनी कविता के द्वारा अपने देश और जाति को ऊंचा उठाने वाला कवि 'राष्ट्रकवि' कहलाता है।

कवियित्री—कविता करने वाली स्त्री को कवियित्री कहते हैं।

कविसम्मेलन—जनसाधारण की वह सभा जिसमें बहुत से कवि क्रमवार अपनी अपनी कविता सुना रहे हों।

कविगोष्ठी—जहां पर सब कवि ही कवि इकट्ठे होकर कविता कि किसी विषय पर चर्चा करें, उसे कवि गोष्ठी कहते है।

लेखक—काव्य की रचना करने वाला व्यक्ति लेखक कहलाता है।

सम्पादक—काव्य अथवा लेख को काट छांट कर ठीक करके, उपयोगी और सुन्दर बनाने वाले व्यक्ति को सम्पादक कहते है।

मुद्रक—पुस्तक को छापने का उत्तरदायित्व जिस व्यक्ति पर हो।

प्रकाशक—पुस्तक का प्रकाशन करने वाला व्यक्ति प्रकाशक है।

संरक्षक—जिस चीज अथवा संस्था का उत्तरदायित्व जिस व्यक्ति पर हो वह व्यक्ति उस चीज अथवा संस्था का संरक्षक कहलाता है।

संस्थापक—किसी संस्था को स्थापित करने वाला व्यक्ति संस्थापक है।

समाचार-पत्र—वह पत्र जिसमें दैनिक समाचार प्रकाशित होते हों।

मासिक-पत्र—ऐसा पत्र जिसका प्रकाशन प्रति मास होता हो।

विशेषाङ्क—किसी पत्र का किसी विशेष प्रयोजन से विशेष प्रकार का प्रकाशन किया जाय, उस अङ्क को विशेषाङ्क कहते हैं।

स्मृति अङ्क—किसी महापुरुष की मृत्यु के पश्चात् उसकी स्मृति में जो विशेषाङ्क निकाला जाय वह स्मृत्याङ्क कहलाता है।

संस्करण—जितनी वार जो पुस्तक छपी है, वह उसका संस्करण है।

भूमिका—किसी पुस्तक का संक्षिप्त परिचय भूमिका होती है।

समालोचना— किसी वस्तु के गुण और दोषों का उचित रूप से सहानुभूति पूर्ण विवरण, समालोचना कहलाती है।

प्रत्यालोचना—समालोचना की समालोचना, प्रत्यालोचना है।

जीवनचरित्र—किसी के सम्पूर्ण जीवन की कहानी जीवन चरित्र है।

कहानी—जिसमें किसी के जीवन के एक अङ्ग अथवा एक घटना का विवरण दिया गया हो, उसे कहानी कहते हैं।

गल्प—काल्पनिक कहानी को गल्प कहते हैं।

उपन्यास—जिसमें किसी व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन पर कलात्मक ढङ्ग से प्रकाश डाला गया हो, उसे उपन्यास कहते हैं।

परिच्छेद—किसी पुस्तक के एक भाग को परिच्छेद कहते हैं।

संस्मरण—किसी व्यक्ति की याद में अपने साथ बीती हुई जो कुछ घटनाएं लिखी जांय, उसे उसका संस्मरण कहते हैं।

व्याख्यान—सभा के अन्दर किसी विषय का ओजपूर्ण प्रदर्शन करते हुए युक्तियुक्त अपने विषय का प्रतिपादन करना ही व्याख्यान है।

अन्तर्कथा—प्राचीन प्रचलित कथाएँ जो किसी काव्य के अन्तर्गत ला जाती हैं, उन्हें अन्तर्कथा कहते हैं।

किम्वदन्ती—किम्वदन्तियाँ उन कथाओं को कहते हैं, जिनका कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं होता किन्तु जनसाधारण की जबान पर होती है।

मुकरनी—सीधे-साधे शब्दों में किसी बात को कहकर मुकर जाना और उसी बात का दूसरा अर्थ कर देना मुकरनी कहलाता है। जैसे—

सारी रात मोरे संग जागा, भोर भई तब बिछुरन लागा।
या बिछुरत मम फाटत हिया, ए सखि साजन! ना सखि दिया॥

नाटक या अभिनय—किसी व्यक्ति का रूप धारण करके उसी के अनुरूप मन वाणी कर्म से प्रत्येक कार्य करना ही अभिनय है।

अङ्क—नाटक के उस भाग का अङ्क कहते हैं कि जिसके बाद सब पात्र कुछ देर के लिये अभिनय बन्द कर देते हैं। नाटक में तीन अंक होते हैं।

दृश्य—अङ्क का वह भाग जिसमें एक घटना का अभिनय हो।

अङ्कावतार—अङ्क के उस अन्तिम भाग को अङ्कावतार कहते हैं कि जिसमें अगले अङ्क में होने वाली बातों की संक्षिप्त सूचना हो।

वस्तु—नाटक में जिस कथा का वर्णन होता है वह वस्तु है।

नान्दी—नाटक के आरम्भ में विघ्नों की शान्ति के लिये प्रार्थना करके दर्शकों को जो आर्शीवाद दिया जाता है, उसे नान्दी कहते हैं।

सूत्राधार—नाटक की व्यवस्था करने वाला मुख्य पात्र, सूत्राधार है।

रङ्गभूमि—जिस स्थान पर नाटक खेला जाता है, वह रङ्गभूमि है।

नेपथ्य—स्टेज के दोनों ओर (परदे के अन्दर) पात्रों के लिये कपड़े आदि बदलने के स्थान को कहते हैं।

विदूषक—अनेक प्रकार के कौतुकों द्वारा दर्शकों का मनोरंजन करने वाला व्यक्ति, विदूषक कहलाता है।

पात्र या नट-नटी—कथा वस्तु से सम्बन्ध रखने वाले स्त्री पुरुषों का अभिनय करने वाले व्यक्तियों को कहते हैं।

पटाक्षेप—पर्दे के गिरने को, पटाक्षेप कहते हैं।

नायक—नाटक में वर्णित प्रधान पात्र को, नायक कहते हैं।

सांकेतिक—पर्दे के पीछे से धीरे धीरे बोलकर पात्रों को बोलने का संकेत देता रहता है।

हिन्दी के दैनिक-पत्र—आज-(बनारस) हिन्दुस्तान-(देहली) हिन्दुस्तान-टाइम्स-(देहली) वीर अर्जुन-(देहली) नवयुग-(देहली) कर्मवीर-(खण्डवा) नवशक्ति (पटना) प्रताप-(कानपुर) सैनिक-(आगरा) भारत-(इलाहाबाद) विश्वमित्र-(कलकत्ता, बम्बई)

साप्ताहिक पत्र—धर्मयुग-(देहली) हिन्दुस्तान-(देहली)।

मासिक प०—सरस्वती-(इलाहाबाद) वीणा-(इन्दौर) हिमालय (पटना) विशाल भारत-(कलकत्ता) कल्याण-(गोरखपुर)।

❀ पर्याय वाची शब्द ❀

गणेश— लम्बोदर, गणपति, 'विकल' गिरजा सुवन, गणेश।
गणनायक, करिवर वदन, रक्षा करो हमेश॥

पृथ्वी— वसुमति, वसुधा, मेदनी, मही, धरत्री भूमि।
पृथ्वी, अचला, अवनि के, 'विकल' चरण शुभ चूम।

पानी— वारि, सलिल, जीवन कहो, तोय, अम्बु, जल, नीर।
पानी ही से मिटत है, 'विकल' प्यास की पीर॥

ब्राह्मण— ब्राह्मण, भू सुर, द्विज कहो, विप्र और भू देव।
बैर न इनसे कर 'विकल', सदा चरण रज सेव॥

फूल— सुमन, प्रसून, पुहुप कहो, कुसुम, पुष्प या फूल।
यह सबको सुन्दर लगैं, विकल न जाना भूल॥

चन्द्रमा— चन्द्र, शशाङ्क, मृगाङ्क है, 'विकल' न कर कुछ शङ्क।
सोम, सुधाकर, कलानिधि, शशि, विधु, इन्दु, मयङ्क॥

दुष्ट— पामर, शठ, दुर्जन, कुटिल, दुष्ट, अधम, खल नीच।
कभी भूलकर भी 'विकल', बैठ न इनके बीच॥

कामदेव—कुसुमासन, मनमथ, मदन, रति पति, मनसिज मार।
कामदेव, कन्दर्प अरु, 'विकल' मनोज विचार॥

आकाश—अन्तरिक्ष, अम्बर, वियति, गगन, व्योम आकाश।
आसमान का नाम नभ, रखो 'विकल' विश्वास॥

हाथी— गज, गयन्द, मातङ्ग, हरि, कुञ्जर, हस्ती, नाग।
सिन्दूर, हाथी पर 'विकल' बैठ बाँध कर पाग॥

स्त्री— तिय, दारा, श्री, कामिनी, रमणी, बाला, वाम।
महिला, अबला सब 'विकल' हैं नारी के नाम॥

आग— जातवेद, ज्वाला, दहन, अनल, अग्नि अरु आग।
वह्नि, कृशानु, पावक, 'विकल' हैं सबमें त्याग॥

साँप— अहि, भुजङ्ग, चक्षुश्रवा, विषधर, मणिधर, व्याल।
साँप, नाग, सारङ्ग 'विकल', जिसकी टेढ़ी चाल॥

विष-- कहो हलाहल, विष, गरल, माहुर, कालहि कूट।
जहर पिये से 'विकलजी' प्राण जात हैं छूट॥

शेषनाग--हरि शैय्या, फणपति कहो, सहस्त्रानना, फणेश।
शेषनाग के नाम यह, 'विकल' विचार हमेश॥

समुद्र-- रत्नाकर, जलनिधि, उदधि, सागर, पारावार।
अर्णव, सिन्धु, समुद्र कह, 'विकल' नदीश, अपार॥

यमुना-- रवि कन्या, कृष्णा, यमी, जय कलिन्दजा कूल।
यमुना के यह नाम हैं, 'विकल' न जाना भूल॥

शराब-- मधु, मदिरा, दारू, सुरा, हाला, मद्य, शराब।
'विकल' वारुणी मत पियो, होगी बुद्धि खराब॥

सिंह-- शेर, केहरी, केसरी, पञ्चानन, मृगराज।
शार्दूल, नाहर, 'विकल', यह सब सिंह समाज॥

स्वर्ण-- हेम, स्वर्ण, कञ्चन, कनक, चमीकर, कलधौत।
सोने में रहती 'विकल', सरस्वती की सौत॥

सूर्य-- तरणि, भानु, रवि, भास्कर, दिनकर, सूर्य, दिनेश।
अंशमालि, सविता, 'विकल' मार्तण्ड, शुभ वेष॥

अमृत-- अमिय कहो, अमृत कहो, सोम, सुधा, सुर भोग।
पान करे से हो अमर, दूर 'विकल' भव रोग॥

कोकिल--काकलीक, पिक, कोकिल, अरु यह दूत बसन्त।
कहाँ गई कोयल 'विकल' कर बसन्त का अन्त॥

इन्द्र-- मघवा, इन्द्र, पुरन्दरह, शचिपति, शक्र, सुरेश।
'विकल' इन्द्र के नाम यह, रखना याद हमेश॥

कमल-- अरविंदहि, पङ्कज, जलज, शतदल, कञ्ज, सरोज।
अम्बुज, वारिज, कोकनद, कमल 'विकल' उरखोज॥

आँख-- आंख कहो, लोचन कहो, चक्षु, नेत्र, दृग, नैन।
'विकल' आंख के नाम यह, कहा चलावत सैन॥

तलवार--असि, कृपाण, करवाल कह, चंद्रहास, तलवार।
'विकल' खड्ग् की होत है, कितनी पैनी धार॥

घोड़ा— हय, वाजी, घोड़ा कहो, सैंधव, अश्व, तुरङ्ग।
घोड़े का रखना कभी 'विकल', न ढीला तङ्ग॥

पर्वत— धरणीधर, नग, महीधर, भूधर, पर्वत, शैल।
गिरि, पहाड़ कहते अचल, 'विकल' मिटा उर मैल॥

बादल— अम्बुद, नीरद, मेघ अरु, पयद, जलद, सारङ्ग।
बादल, घन, पुरजन 'विकल' लख रह जाओ दङ्ग॥

भौंरा— भौरा, षटपद, अलि, भ्रमर, शिलिमुख, मधुप, द्विरेफ।
चंचरीक, मधुकर 'विकल' नाम मलिन्द अनेक॥

बिजली—विद्युत, चपला, चंचला, तड़ित, दामिनी जान।
यह बिजली के नाम हैं, बात 'विकल' मम मान॥

मोर— विष भक्षी, सारंग कहो, केकी, कण्ठी, मोर।
कूकत 'विकल' मयूर है, देख घटा घनघोर॥

बन्दर— शाखा मृग, मर्कट कहो, कपि, वानर, हरि, कीश।
बन्दर के पुरखा वही, जय जय 'विकल' कपीश॥

सुन्दर— रुचिर, मनोहर, कमनीय, मंजुल, मंजु, ललाम।
कलित, ललित, रमणीक, अरु, 'विकल' चारु अभिराम॥

पक्षी— पक्षी, पखेरू, परिन्द, द्विज, अंडज, शकुनि, पतङ्ग।
उड़ें हवा में नित 'विकल', खग है, विहग, विहंग॥

हवा— हवा, पवन, वायु, अनिल, मारुत, वात, बयार।
'विकल' समीरण, प्रकम्पन, औ पवमान विचार॥

घर— भवन, सदन, मन्दिर, अयन, आलय, धाम, निकेत।
गेह, ओक, शाला, निलय, विकल देख गृह सेत॥

इच्छा— इच्छा, ईहा, कामना, वांच्छा, लिप्सा, चाह।
अभिलाषा, आकांक्षा, 'विकल' उत्कण्ठा वाह॥

रात— निशा, नीशीथ, विभावरी, तमी, तमिस्रा, जान।
रात, रात्रि, रजनी, 'विकल' नाम रात के मान॥

किनारा— अवधि, कूल, तट, पुलिन औ, सीमा, तीर, प्रतीर,।
नाम किनारे के 'विकल' पहुन सभी मति धीर॥

नाव— तर, तरनी, वोहित कहो, नाव, पोत, जलयान ।
यही नाव के नाम हैं, 'विकल' बात मम मान ॥

मछली— मीन, उलूपी, चिलचिमि, सफरी, मछली मत्स्य ।
यह मछली के नाम है, 'विकल' बात मम सत्य ॥

पत्र— पत्र, पर्ण, पल्लव, छदन, किसलय, छद, दल, बोल ।
'विकल' पत्र के नाम यह, सुनो श्रवण निज खोल ॥

उल्लू— वायस रिपु, उल्लू, उलू, कौशिक और उलूक ।
दिवा भीति, निश प्रिय 'विकल' कहने में मत चूक ॥

तोता— सुग्य, सुवा, चाकी, दिवि, अनुवादी, शुक, कीर ।
किन्सी, चाष 'विकल' कहो, है तोता मति धीर ॥

तीर— तीर, बाण, शर, सिलीमुख, तोमर औ नाराच ।
'विकल' तीर को लखत ही, मारे हरिन कुलांच ॥

ऊंट— लम्बग्रीव, कह ऊंट या उष्ट्र, झमेल, करम्भ ।
महा अङ्ग भी ऊंट है 'विकल' न करना दम्भ ॥

पपीहा— सारङ्ग, हरि, चातक कहो, काल कण्ठ, प्रिय बोल ।
पीऊ पीऊ पपीहा 'विकल' बोलत बोल अमोल ॥

चकोर— विष सूचक, अङ्गार भख, भीसक, जावं, गुद्राल ।
शशि प्रिय 'विकल' चकोर यह, देखत चन्द्र विहाल ॥

आनन्द— सुख, आनन्द, प्रसन्नता, हर्ष, आल्हाद, आमोद ।
'विकल' सदा आनन्द करो, नित नव मोद प्रमोद ।।

गंगा— सुरसरि, गंगा, जाह्नवी, सुर सरिता, सुरधार ।
'विकल' त्रिपथगा है यही, भागीरथी निहार ॥

पुत्री— पुत्री, बेटी, आत्मजा, लड़की, दुहिता, धीय ।
'विकल' सुता के नाम यह, हैं कितने कमनीय ॥

लक्ष्मी— सिंघुसुता, कमला, रमा, अरु वाहिनी उलूक ।
'विकल' लक्ष्मी, चंचला, कहने में मत चूक ॥

ब्रह्मा— चतुरानन, अज, प्रजापति, विधना, सृष्टा नाम ।
ब्रह्मा जी ने ही रचा, 'विकल' विश्व अभिराम ॥

कृष्ण— केशव, मुर्लीधर, मन मोहन, गिरधर माधव हे नंदलाल ।
कृष्ण, मुरारी, विपिनविहारी, कालिय मद मर्दन गोपाल ॥

सरस्वती—वीणा पाणी, सुहंस वाहिनी, वाणी, रसना, ज्ञान ।
'विकल' शारदा, सरस्वती जय, विद्या करो प्रदान ॥

शङ्कर— मदन मार त्रिपुरारि, त्रिलोचन, विश्वम्भर, गिर्जेश ।
भूतनाथ, शङ्कर, प्रलयंकर, भोलानाथ महेश ॥
नीलकंठ, कैलासी वासी, औघड़ 'विकल' निहंग ॥
चन्द्र मौलि, बम महादेव, कै शीश विराजै गङ्ग ॥

विष्णु— शेषशायी, जयविष्णु, रमापति, चक्रपाणि, अभिराम ।
जग पालक, सुख दायक लायक, रक्षक जय निष्काम ॥
घट-घट वासी, सब सुखराशी, अविनाशी, छविधाम ।
अजर अमर हे विश्व नियन्ता, प्रभु को 'विकल' प्रणाम ॥

अनेक अर्थ वाले शब्द

द्विज–(ब्राह्मण, पक्षी, चन्द्रमा) पट–(दरवाजा, पर्दा, वस्त्र) विधि–(ब्रह्मा, भाग्य, रीति) अज–(दशरथ के पिता, बकरा, ब्रह्मा) पद–(पदवी, पङ्ख, छन्द का एक चरण) पत्र–(पत्ता, चिट्ठी, पङ्ख) कनक–(धतूरा, सोना, गेहूं) अर्थ–(धन, मतलब, प्रयोग) अम्बर–(वस्त्र, आकाश, एक औषधि) तात–(पिता, भाई, मित्र, बड़ा, प्यारा) वर–(वरदान, श्रेष्ठ, दूल्हा) सैंधव–(नमक, घोड़ा) मान–(नाप-तोल, सम्मान, अभिमान) कर–(सूर्य, हाथ, टैक्स) हरि–(बन्दर, पानी, सांप, मेढक, भगवान, मेंह, घोड़ा आदि) सारङ्ग–(स्त्री, दीपक, मेह, मोर, सांप, हिरन कोयल आदि ।

हरि बोला, हरि ने सुना, हरि गये हरि के पास ।
वह हरि तो हरि में गये, वह हरि भये उदास ॥

सारङ्ग नैना, सारङ्ग बैना, सारङ्ग ले चली सारङ्ग को ।
सारङ्ग नै जल बोर दियो, सारङ्ग पुचकारे सारङ्ग को ॥

सारङ्ग ने सारङ्ग गहो, सारङ्ग पहुंचा आय ।
जो मुख से सारङ्ग कहूं, तो सारङ्ग छूटो जाय ॥

❊ सरस व्याकरण ❊

व्याकरण-- लिखना, पढ़ना, बोलना शुद्ध सदा सिखलाय।
सब कहते विद्या विकल, वह व्याकरण कहाय ॥

वर्ण या अक्षर--भिन्न-भिन्न सङ्केत ध्वनि, मुख अङ्गों के बोल।
वर्ण यही अक्षर 'विकल', भाषा मूल अमोल ॥

वर्ण के भेद-- 'विकल' वर्ण के भेद दो, रखो याद पहचान।
अ से औ तक स्वर रहें, बाकी व्यञ्जन जान ॥

स्वर के भेद--स्वर के भी दो भेद हैं, रखे याद क्यों तू न।
ह्रस्व समय थोड़ा लगे, दीर्घ ह्रस्व से दून ॥

वाक्य-- वाक्य शब्द का योग है, कहता 'विकल' पुकार।
वक्ता का सुन जान ले, श्रोता पूर्ण विचार ॥
जिसके बारे में कहा, उसका नाम उद्देश्य।
कहा जाय जो कुछ उसे, समझो 'विकल' विधेय ॥
उदाहरण को वाक्य है, रामचन्द्र सुधि लेय।
रामचन्द्र उद्देश्य है, बाकी वाक्य विधेय ॥

भाषा-- वर्ण मिले से शब्द हैं, शब्द मिले से वाक्य।
वाक्य मिले भाषा बने,'विकल' नियम परिपाक्य ॥

शब्द-- शब्द सुने जो कान, पाँच भेद हैं शब्द के।
अव्यय विशेषण जान, सर्वनाम, संज्ञा, क्रिया ॥

संज्ञा— किसी वस्तु के नाम को, कह संज्ञा हे राम।
राम न संज्ञा हो 'विकल', संज्ञा राम सुनाम ॥
जाति व्यक्ति अरु भाव के, पीछे वाचक जोड़।
संज्ञा के त्रय भेद हैं, 'विकल' न पीछा छोड़ ॥

जाति बोध हो जातहि वाचक, जैसे चिऊँटी गाय गधा।
वस्तु विशेष हो व्यक्ति वाचक, जैसे गङ्गा, कृष्ण, सुधा ॥
दशा और गुण प्रकट हो जिससे, 'विकल' भाव वाचक कहना।
जैसे–सुन्दरता, दरिद्रता, लम्बा, चौड़ा, कम, बहना ॥

लिङ्ग— लिङ्ग के द्वारा होत है, संज्ञा की पहचान।
स्त्री लिङ्ग स्त्री 'विकल', पुल्लिङ्ग पुरुषहि जान ॥

वचन— एक वचन एक वस्तु बताय। जैसे पुस्तक।
बहु वचन बहु वस्तु लखाय ॥ जैसे पुस्तकें ॥

कारक— वाक्य बीच संज्ञा की अवस्था को बस कारक जानो।
संज्ञा का सम्बन्ध वाक्य का, अर्थ इन्हीं से मानो ॥

कारक आठ प्रकार के होते हैं:—

सम्प्रदान, कर्त्ता, करण, अपादान, सम्बन्ध।
सम्बोधन अरु अधिकरण, कर्म सुकारक बन्धु ॥

कर्ता— काम करैं सो कर्ता जानो, [ने] को इसका चिन्ह बखानो।
जैसे कृष्ण [ने] कंस को मारा ॥

कर्म— जिस पर रहे क्रिया का फल, कर्म वही [को] चिन्ह अटल।
जैसे कृष्ण ने कंस [को] मारा ॥

करण— जिससे कर्ता कर्ता काम, [से] है चिन्ह, करण है नाम।
जैसे बाण [से] रावण मारा ॥

सम्प्रदान--जिसके लिये किया कुछ जाय, सम्प्रदान [के लिये] कहाय।
जैसे राम [के लिये] है सीता ॥

अपादान--निश्चित समय जुदा हो जाना, अपादान [से] चिन्ह बखाना।
जैसे पेड़ [से] गिरता पत्ता ॥

सम्बन्ध--हैं सम्बन्व जो हो सम्बन्ध, चिन्ह हैं [को, की, के] प्रिय बन्धु।
जैसे कृष्ण [की] सुन्दर गाय ॥

अधिकरण-हो आधार क्रिया का जिस पर, अधिकरण जानों [में,पै,पर]
जैसे रेल [में] औ कोठे [पर] ॥

सम्बोधन--सम्बोधन ने खूब पुकारा [हे, हो, अरे, हरे, ओ] प्यारा।
[अरे] राम [हे] कृष्ण कहाँ [हो] ॥

एक ऐसा वाक्य जिसमें आठों कारक हैं—

हे! सम्बोधन, कर्ता ने, करण द्वारा, सम्प्रदान के लिए, अधिकरण पर, कर्म को, सम्बन्ध की चिन्ता न कर, अपादान से नीचे गिरा दिया।

सर्वनाम-- जिन शब्दों का संज्ञाओं के, बदले में सब करे प्रयोग।
जैसे मैं, तुम आदि शब्द हैं, सर्वनाम कहलाने योग्य ॥
वाक्य बने सुन्दर अरु छोटा, सर्वनाम से लाभ यही।
याद रखो छः भेद हैं इसके, हमने सच्ची बात कही ॥
निश्चय और अनिश्चय वाचक, निज वाचक जानो सम्बन्ध।
कभी न भूलो इसे 'विकल' जी, प्रश्न पुरुषवाचक प्रिय बन्धु ॥

पुरुषवाचक--पुरुष प्रयोगहि शब्द को, पुरुषहि वाचक जान।
उत्तम, मध्यम अन्य यह, तीन भेद धर ध्यान ॥
बात कहै सो 'उत्तम, जानों। 'मैं' 'हम' इसके चिन्ह बखानों ॥
मध्यम जिससे कहते बात। 'तू' 'तुम' इसके चिन्ह हैं तात ॥
'अन्य' विषय में जिसके कहो। 'वह' 'वे' इसके चिन्ह अहो ॥
निश्चय होय सो निश्चय वाचक, जैसे वह आया।
निश्चय न हो, अनिश्चय वाचक, जैसे कुछ लाया ॥
सम्बन्ध से सम्बन्ध जानो, जैसे जो भी लायगा।
प्रश्न कर्ता प्रश्न वाचक, जैसे अब क्या खायगा ?
कर्ता के हित याद रख, सर्वनाम जो होय।
निज वाचक वो है 'विकल', 'आप' चिन्ह है सोय ॥

विशेषण--संज्ञाओं की सुन विशेषता, जिन शब्दों से जानी जाय।
उसे विशेषण कहें भेद अब सुनो विशेषण के चित लाय ॥
गुण,परिमाण,व्यक्ति अरु संख्या,हैं संकेत विभाग सुनाम।
करो कंठ छः भेद मित्रवर, तुम्हें कभी आयेंगे काम ॥
गुणवाचक है वही विशेषण, जो संज्ञा के गुण बतलाय।
और वही परिमाण विशेषण, संज्ञा का परिमाण लखाय।
संख्या वाचक संख्या कहता, अरु संकेत करे संकेत।
बना व्यक्तिवाचक संज्ञा से, साफ व्यक्तिवाचक कह देत ॥
अलग अलग होना बतलावे, सो विभाग बोधक भाई।
याद रखो तो याद करोगे, खूब 'विकल' कविता गाई ॥

गुणवाचक— मीठा आम संकेतवाचक— यह आम

परिमाणवाचक—छोटा आम व्यक्तिवाचक— बनारसी आम

संख्यावाचक— चार आम विभागबोधक— हर एक आम

क्रिया— होना करना काम का, जिसमें पाया जाय।
क्रिया उसी का नाम है, रहा 'विकल' समझाय॥

क्रिया के दो भेद होते हैं [१] अकर्मक [२] सकर्मक

सहित कर्म के जो रहे, उसे सकर्मक जान।
कर्म न जिसके साथ हो, 'विकल' अकर्मक मान॥

जैसे बच्चे ने दूध पिया सकर्मक। घोड़ा दौड़ा अकर्मक॥

काल—जिस समय क्रिया कोई भी होय। तुम याद रखो है काल सोय।
लख भूत भविष्यत वर्तमान। यह भेद काल के तीन जान।

बीते समय में जिस क्रिया का, मित्र होना जान लो।
वह भूत काल कहात है, छः भेद उसके मान लो॥
सामान्य अरु आसन्न, पूर्ण, अपूर्ण है संदिग्ध नाम।
तू हेतु हेतु मद् भूत को मत भूल यह आयेगा काम॥

निश्चित समय न जाना जाय, सो सामान्य भूत कहाय॥ जैसे आया।
थोड़ा समय हो बीते काम, उसका आसन्न भूत है नाम॥ जैसे आया है
काम हुए हो अधिक समय, पूर्ण भूत जानों सुख मय॥ जैसे आया था
जिससे काम न पूरा होय, सुन अपूर्ण भूत है सोय॥ जैसे आता था
काम होंने में हो सन्देह, तो सन्दिग्ध भूत कह देय॥ जैसे आया होगा
एक भूत दूजे पर निर्भर, हेतु हेतु मद भूत 'विकल' वर॥

वर्तमान काल—वर्तमान में क्रिया का, होना जो बतलाय।
वर्तमान वह काल है, सुनो मित्र चितलाय॥
सन्दिग्ध औ सामान्य के सङ्ग हेतु २ मद जान।
और चौथा भेद इसका, तत्कालिक वर्तमान॥
काल निश्चित ही नहीं, सामान्य 'खाता है' सुनो।
काम फौरन तत्कालिक कर रहा मन में गुनो॥
जिसमें हो सन्देह तो सन्दिग्ध, 'खाता होयगा'।
हेतु हेतु रहे दूसरे पर, 'सोयगा तो खोयगा'॥

भविष्यकाल— जिस क्रिया का होना पाय जाय अगले काम में ।
वह भविष्यत् काल है, आया तुम्हारे ख्याल में ॥
हो नहीं निश्चित भविष्य, सामान्य जैसे 'आयगा' ।
सम्भाव्य में सम्भावना हो 'राम शायद जायगा' ॥
हो भविष्य दूजे पै निर्भर, हेतु हेतु मद जानलो ।
जैसे आये तो मैं जाऊँ, इसको सब पहचान लो ॥

विधि क्रिया— आज्ञा हो या प्रार्थना, जिसमें जानी जाय ।
जैसे बैठो, बैठिये, विधि क्रिया कहलाय ॥

पूर्वकालिक क्रिया—जिस क्रिया का 'विकल' होना, दूजी पर निर्भर हुआ ।
पूर्व कालिक सो क्रिया है, जैसे 'वह पढ़कर गया' ॥

प्रेरणार्थक क्रिया—काम दूसरे से ले कर्ता, प्रेरणार्थक कह दूंगा ।
उदाहरण को वाक्य 'विकल' है, 'मैं तुमसे रोटी लूंगा ॥

संयुक्त क्रिया— दो या दो से अधिक क्रिया मिल नये अर्थ को प्रकट किया ।
जैसे वह पानी पी भागा, पी भागा है संयुक्त क्रिया ॥

अव्यय— लिङ्ग, वचन, कारक का जिन शब्दों पर होता नहीं असर ।
सदा एक से रहे उन्हीं को, कहते अव्यय हे प्रियवर ॥
सम्बन्ध और निषेध समुच्चय, क्रिया विशेषण करले याद ।
अव्यय के छः भेद बताये, विस्मादि बोधक अरु प्रादि ॥
संज्ञा का सम्बन्ध दूसरे शब्दों से जब जाना जाय ।
जैसे राम की गाय कृष्ण के पास, रहा सम्बन्ध बताय ॥
क्रिया होने में जब निषेध हो, उसको सभी निषेध कहो ।
जैसे, क्योंकर कैसे, कितना, नहीं न मत कब आदि अहो ॥
शब्द और वाक्यों को मिलाये, सो समुच्य बोधक लो जान ।
जैसे, और तथा, कि, क्योंकि आदि चिन्ह लो इसके मान ॥
करे हृदय का भाव प्रकट जो, विस्मयादि बोधक जानो ।
हाय, वाह वाह, धन्य धन्य, जय जय, थू थू, दुर दुर मानो ॥
पूर्व क्रिया के आकर उसका, बदल देय जो अर्थ अहो ।
ज्यों आहार, विहार, इसे तुम प्रादि कहो उपसर्ग कहो ॥

और क्रिया की कुछ विशेषता क्रिया विशेषण बतलाये।
जैसे परसों, निकट, बुरा, प्रति, हां, अच्छा, जी हाँ गाये ॥

सन्धि— दो अक्षर के मेल को, 'विकल' सन्धि-बतलाय।
महा ईश के योग से, ज्यों महेश बन जाय ॥
स्वर, विसर्ग व्यञ्जन सुनो तीन भेद धर ध्यान।
व्यञ्जन से व्यञ्जन मिले, व्यञ्जन सन्धि सुजान ॥ जगत+नाथ
जब विसर्ग के सङ्ग में, स्वर व्यंजन मिल जाय।
रहे मनोहर को 'विकल' हम विसर्ग बतलाय ॥
दीर्घ ह्रस्व स्वर एक से, मिलै दीर्घ स्वर होय।
परम अर्थ परमार्थ लख, है स्वर संधि सोय ॥

समास-- दो पद मिलते हो जहाँ देख। वह है समास तू चित पै लेख।
अव्ययी भाव अरु तत्पुरुष, बहुब्रीहि, द्विग, द्वन्द।
है समास के भेद छः, कर्मधारय, स्वच्छन्द ॥
रात और दिन और छिपा हो, द्वन्द याद रख करो प्रयत्न।
संख्या वाचक रहे विशेषण, पहला पद द्विगु ज्यों नवरत्न ॥
कर्मधारय पद प्रथम विशेषण, उदाहरण मृदुवाक्य कहो।
हो प्रधान पिछला पद जैसे, राजभवन तत्पुरुष अहो ॥
पद पहिला हो अव्यय जैसे, यथाशक्ति सो अव्ययी भाव।
हो प्रधान पद अन्य जहाँ, सो बहुब्रीहि ज्यों दशमुख राव ॥

चौबीस अवतार--- (१) मत्स (२) कूर्म (३) वराह (४) नर नारायण (५) सनत्कुमार (६) कपिलदेव (७) दत्तात्रेय (८) राम (९) परशुराम (१०) नृसिह (११) वामन (१२) मोहनी (१३) यज्ञ महापुरुष (१४) हरि (१५) शुक (१६) हयग्रीव (१७) व्यास (१८) श्रीकृष्ण (१९) हंस (२०) धनवन्तरी (२१) पृथु (२२) ऋषभदेव (२३) बुद्ध (२४) कल्कि।

तेतीस देवता—८ वसु, ११ रुद्र, १२ आदित्य, १ इन्द्र, १ प्रजापति।

चौरासी लाख योनि---४ पुरुष, ९ जलचर, १० पक्षी, ११ कीड़े-मकोड़े, चतुष्पद और २० लाख स्थावर हैं।

❀ विराम विवरण ❀

अल्प विराम—(,) जिस वाक्य में एक ही प्रकार के कई शब्द या वाक्यांश होते हैं तब इसका प्रयोग होता हैं। जैसे-भ्राम, जामुन, केला ओर अनार लाओ। वाक्यांश—जिसका धन लुट गया, जिसका घर जल गया और जिसका पुत्र भी मर गया है, उसकी क्या दशा होगी।

अर्द्धविराम—(;) इसका प्रयोग बड़े-बड़े वाक्यों को अलग करने में होता है। जैसे—वनवास से जब रामचन्द्रजी अयोध्मापुरी लौट आये; तब उनकी आयु ३२ वर्ष थी।

पूर्णविराम—(।) इसका प्रयोग प्रत्येक वाक्य के अन्त में होता है। जैसे—रेलगाड़ी छूट रही है। माय वैठी है।

प्रश्नवाचक—(?) प्रश्न समझा जाय। जैसे–तुम क्या खाओगे?

विस्मयादि बोधक—(!) हर्ष, आश्चर्य, भय तथा बुलाने के लिए भी इसका प्रयोग होता है। जैसे–वाह! खूब कही। हे! यह क्या! हाय! मैं मरा! मुझे बचाओ! अरे! जल्दी आओ।

उद्धरणचिन्ह—(" ") इसका प्रयोग किसी की कही बात के आदि और अन्त में होता है। जैसे-"सत्य से वढ़कर कोई तप नहीं है"।

कोष्टक—( ) किसी शब्द या वाक्यांश का अर्थ खोलने में इसका प्रयोग होता है। जैसे मैं उस दिन (मंगलवार) को न आ सकूंगा! राम ने कहा कि उनसे मेरा (पिता पुत्र का) सम्बन्ध है।

मध्यवर्ती—(-) वाक्यों में समासिक शब्दों के वोध में आता है। जैसे–किसके माता-पिता अमर हैं।

डेश—(—) जिस वाक्य में एक बात कहते हुए किसी दूसरी बात का प्रयोग किया जाय। या उसकी व्याख्या की जाय, जैसे—झूंठ वोला तो इसे देखो—पिता ने डंडे की ओर इशारा किया।

विवरण चिन्ह—(:—) जब एक वाक्य के पीछे कई बातें लिखी जाती है, तब इसका प्रयोग होता है। जैसे—

इन शब्दों के अर्थ बताओः—आडम्बर, आकाशवाणी, विश्वरूप आदि।

※ निबन्ध निर्णय ※

निबन्ध—किसी व्यक्ति, वस्तु अथवा घटना के बारे में अपने विचारों को लिखना निबन्ध कहलाता है। तीन बातें याद रखिए।

(१) निबन्ध की मूल वस्तु क्या है, (२) निबन्ध की शैली कैसी होनी चाहिए, (३) निबन्ध में आकर्षण कैसे पैदा किया जावे।

मूल वस्तु—जिस विषय पर निबन्ध लिखा जाय वही मूल वस्तु है।

शैली—शैली प्रत्येक लेखक की भिन्न होती है। तब भी इन बातों का सबको ध्यान रखना चाहिए कि, (१) भाषा सरल हो, (२) कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक भाव भरे जायें, (३) प्रवाह ठीक रहे अर्थात् एक विषय के बाद दूसरा विचार, इस प्रकार से आये कि दोनों का सम्बन्ध न टूटने पाये। निबन्ध दो प्रकार के होते हैं :—

१-वर्णात्मक—जिन वस्तुओं को हम प्रत्यक्ष देखते हैं उन पर लिखा हुआ निबन्ध वर्णात्मक निबन्ध कहलाता है।

२-विचारात्मक—मनुष्य के हितकर विषयों के सम्बन्ध में लिखा हुआ निबंध विचारात्मक निबंध कहलाता है। निबंध के तीन भाग होते हैं।

(१) प्रस्तावना—प्रभावशाली शब्दों के साथ मूल विषय को आरम्भ करना, प्रस्तावना कहलाता है। (२) मूल विषय—यह निबंध का प्राण है। इसे खूब दिल खोलकर लिखिये। अन्त—प्रस्तावना की भांति और प्रभावशाली शब्दों में निबन्ध का अंत करिये।

निबन्ध लिखने से पहिले उसके शीर्षक बना लीजिये। जैसे–हमें देश सेवा पर निबन्ध लिखना है तो नीचे लिखे शीर्षक बने:—

(१) देश सेवा क्या है, (२) अपने देश के प्रति प्रेम, (३) सच्ची देश सेवा और झूठी देश सेवा, (४) स्वदेश प्रेमी देशों के उदाहरण, (५) भविष्य का चिंतन, (६) अंत।

रेल पर निबध लिखने के लिये शीर्षक-यह बने—(१) रेलगाड़ी क्या है, (२) कैसे और किसने बनाई, (३) स्टेशन का दृष्य, (४) चलती गाड़ी का दृश्य, (५) लाभ तथा हानि (६) अंत।

☆ याद रखने योग्य कुछ विशेष बातें ☆

एक— एक सूर्य, एक चन्द्र है, एक वही, अभिराम।
उसी एक के हो गये, 'विकल' अनेकों नाम ॥

दो— कर, पग, नैन, श्रवण दोऊ, दो सरिता के कूल।
मास पक्ष, फल दो 'विकल', पाप पुण्य मत भूल ॥

वेद के काण्ड—ज्ञान ओ कर्म उपासना, काण्ड वेद के जान।

अग्नि— बड़वा, दवा, जठर की, अग्नि 'विकल' त्रय मान ॥

गुण— सतो, रजो गुण, तमोगुण, यही तीन गुण जान।

ऋण— देव, पितृ अरु गुरु का, विकल तीन ऋण मान ॥

शरीर— 'विकल' शरीर, स्थूल अरु, सूक्ष्म, कारण रूप।

काल— वर्तमान अरु भूत लख, काल भविष्य अनूप ॥

क्रिया— क्रिया समाजिक, मानसिक, अरु शारीरिक जान।

धर्म के अंग—'विकल' धर्म के अङ्ग त्रय, विद्या, यज्ञ अरु दान ॥

दुःख— दुःख दैहिक, दैविक, 'विकल' तीजो भौतिक नाम।

वायु के गुण—शीतल, मंद सुगन्ध यह, वायु भेद अभिराम ॥

लोक— भू, आकाश, पताल यह, विकल लोक मत भूल।

देव— ब्रह्मा, विष्णु, महेश त्रय, देव रहें अनुकूल ॥

कर्म— कर्म तीन, संचित 'विकल' प्रालब्ध, क्रियमाण।

कारण— कारण, साधारण, निमित्त, शेष रहा उपादान ॥

सृष्टि— अंडज, स्वेदज, उद्जिभ, 'विकल' जरायुज सृष्टि।

मत— शैव, शक्ति, वेदान्त अरु, वैष्णव, यह मत पुष्टि ॥

वेद— वेद हमारे चार हैं, ऋग, यजु, साम, अथर्व।
जिनके सत शुभ ज्ञान पर, 'विकल' न हो क्यों गर्व ॥

मुक्तिके प्रकार—सलोक्य, सामीप्य अरु, सायुज्य, सारिष्ठ।
यह प्रकार है मुक्ति के, 'विकल' जिसे हो इष्ट ॥

उपवेद— आयुर, धनु, गंधर्व अरु, 'विकल' अथर्व, उपवेद।

वर्ण— वर्ण—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र लख भेद ॥

चार ब्राह्मण—है ब्राह्मण यह–एतरेय, शतपथ, गोपथ, साम।
युग— युग-सतयुग, त्रेता 'विकल' द्वापर, कलियुग नाम॥
नीति— साम, दाम अरु दंड यह, भेद सुनीत विचार।
स्त्री— 'विकल' हस्तिनी, शंखनी, पद्मनी, चित्रणि नार॥
भक्त— शांतचित्त, अर्थार्थी, दुखी, जिज्ञासु सुजान।
सेना अंग— रथ, हाथी, पैदल, तुरंग, 'विकल' सैन्य शुभमान॥
पंच तत्व— अग्नि, वायु, आकाश, जल, भूमि पाँचवाँ तत्व।
पंचभूत का है 'विकल' जग में बड़ा महत्व॥
ज्ञानेंद्रिय— ज्ञानेन्द्रिय जिह्वा, त्वचा, आँख, नाक अरु कान।
कर्मेन्द्रिय— कर, पग, मुख कर्मेन्द्रिय, मल मूत्रक स्थान॥
काम बाण— शुष्क, शिथिल, मोहित, तपन, मस्त काम के बान।
शत्रु— 'विकल' काम, मद, लोभ, मोह दुश्मन क्रोध महान॥
विद्यार्थी ल०—काक चेष्टा, ध्यान वक, ब्रह्मचर्य, अल्पाहार।
नींद स्वान सम, यह 'विकल' विद्यार्थी आधार॥
जननी— जन्म भूमि, जननी, 'विकल' गुरु-पत्नी अरु सास।
राजा की रानी सहित, पांच मात सुखरास॥
पंचामृत— पंचामृत–मधु, घृत, दही, दूध और जल गङ्ग।
पंच यज्ञ— देव, भूत, पितु, ब्रह्म, अतिथ, करो यज्ञ मत भंग॥
पंच गव्य— दूध, दही, गोमूत्र, घी, गोमय 'विकल' सुजान।
पंच पिता— रक्षक, दाता अन्न का, ससुर, गुरु, पितु, मान॥
छः वेदाङ्ग— शिक्षा, कल्प, अरु व्याकरण, ज्योतिष, छन्द, निरुक्त।
भेद 'विकल' वेदाङ्ग के, पूर्ण ज्ञान से युक्त॥
ऋतु— ग्रीष्म 'विकल' वर्षा, शरद्, हेमन्त, शिशिर, वसंत।
छः ऋतु दो दो मास की, करैं वर्ष का अन्त॥
घोर दुःख— गर्भ, जन्म, मृत्यु, जरा, क्षुधा, भयङ्कर रोग।
घोर दुख यह छः 'विकल' पड़ै भोगने भोग॥
छः इति— अनावृष्टि, अतिवृष्टि हो, शलभ, मृतक, खगवृन्द।
'विकल' आक्रमण इति यही, भूल नहीं मतिमन्द॥

छः राग— दीपक, भैरव, मेघ, श्री, माल कोष, हिण्डोल।
राग 'विकल' छः होत यह, सुनो श्रवण निज खोल॥

छः विकार— परिवर्तन, वृद्धि, स्थिति, उत्पत्ति, न्यून, विनाश।
छः विकार यह 'विकलजी' रहते सबके पास॥

जीव के गुण– 'विकल' प्रयत्न अरुद्वेष है, दुख, सुख इच्छा, ज्ञान।
यह छः गुण हैं जीव के, बात हमारी मान॥

छः रस— मीठा, खट्टा चर्परा कटु, कसैला, खार।
यह छः रस कहलात हैं, करिये 'विकल' विचार॥

छः पदार्थ— सामान्य, गुण, कर्म, द्रव्य, अरु समवाय, विशेष।
छः पदार्थ होते 'विकल' रखना याद हमेश॥

छः उपांग— न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, सांख्य, योग, वेदान्त।
यह उपाङ्ग के भेद छः 'विकल' हृदय रख शान्त॥

विद्या नाशक–निद्रा, आलस, स्वाद, सुख, चिन्ता, केलि औ काम।
विद्या नाशक यह 'विकल' हैं अवगुण बदनाम॥

सप्त स्वर— खड़ज, ऋषभ, गाँधार अरु, पंचम, धैवत जान।
मध्यम और निषाद यह, 'विकल' सप्त स्वर मान॥

सप्त ऋषि— कौशिक, गौतम, यमदग्नि, कश्यप, भारद्वाज।
अत्रि, वशिष्ठ, 'विकल' गिनों यह ऋषि सप्त समाज॥

चिरंजीवि— अश्वस्थामा, परशुधर, कृपाचार्य, बलि, व्यास।
'विकल' पवनसुत, विभीषण, चिरंजीवी, सुखरास॥

सप्त मुनि— लक्ष्य, तुलह, कतु, अंगिरा, अत्रि, मरिचि, वशिष्ठ।
'विकल' यही मुनि सप्त हैं, जो प्रभु प्रेम प्रविष्ठ॥

सप्त सुख— सुख-आरोग्य, वियोग दुख, तन सुन्दर, सन्मान।
नारी, सुत, धन धाम हो, 'विकल' सात सुख जान॥

पाताल— अतल, तलातल, रसातल, सुतल, वितल, पाताल।
लखो महातल को विकल, कितना गहन विशाल॥

सप्त आकाश– भू, भुवः, स्वः,मह, जनः, तप, सत्यः सप्त आकाश।
गायत्री के मन्त्र पर, करो 'विकल' विश्वास॥

सप्त सागर— इच्छा रस, मधु, घृत, सुरा, दही, क्षीर, अरु क्षार।
सप्त महा सागर विकल, जानत सब संसार॥

सप्त महाद्वीप–प्रलक्ष, कौच, कुश, शाल्मली, जम्बू, पुष्कर, शाक।
महाद्वीप यह सात हैं, विकल, न मुंह को ताक॥

आठ वसु-- पृथ्वी, जल, रवि, शशि, नखत, अग्नि, वायु, आकाश।
यही आठ वसु हैं विकल, रखो पूर्ण विश्वास॥

आठ विवाह– प्राजपत्य, पैशाच अरु, असुर, आर्ष गान्धर्व।
ब्रह्म दैव, राक्षस यही, 'विकल' विवाह हैं सर्व॥

अष्ट सिद्धि— अणिमा, गरिमा, प्राप्ति अरु, क्या ईशित्व, वशित्व।
लघिमा, प्राकम्य विकल, अष्ट सिद्ध यह सत्व॥

अष्ट नाग— तक्षक, कर्केटिक, कुलिक, वासुकी, पद्म, अनन्त।
शंख, महापद्म विकल, नाग, आठ, बलवन्त॥

अष्ट धातु— रांग, जस्त, शीशा, रजत, पारा, तांबा, लोह।
स्वर्ण देख करके विकल, किसे न होता मोह॥

दिग्गज— पुण्डरीक, वामन, कुमुद, ऐरावत, सु प्रतांक।
पुष्पदन्त, अंजन, विकल, सार्वभौम अवि शांत॥

नवदुर्गा— जय शैल पुत्री, चंद्रघंटा, सिद्धिता, कात्यायिनी।
जय महागौरी जयति जय जय, काल रात्रि भयावनी॥
जयति जय, स्कंध माँ, कूष्म्याण्डक, ब्रह्मचारिणी।
जयति नवदुर्गा 'विकल' के, सर्व संकट हारिणी॥

हिंदी नौ रत्न–केशव, तुलसी, सूर, बिहारी, भूषण, देव, चंद्र, मतिराम।
भारतेन्दु, हरिचंद, विकलजी, हिंदी के नवरत्न ललाम॥

विक्रम के नवरत्न— धनवन्तरि, क्षपणक, अमर, घटखर्पर, वैताल।
कालिदास, वरहमिहर, शंकु 'विकल' नव लाल॥

नव ग्रह— मङ्गल, बुद्ध, गुरू, शुक्र, शनि, राहु, केतु, रवि, सोम।
यह नवग्रह के नाम हैं, विकल मिटा तम तोम॥

नव भक्ति— श्रवण, कीर्तन, स्मरण, अर्चन, वंदन दास।
विकल निवेदन, सेव्य पद, वर्णन भक्ति सुभाप॥

नव खण्ड— हरि, कुरु, रम्यक, किंपुरुप, भद्रश्वा, हिरण्य ।
इलावर्त, भारत, विकल, केतु, माल, अति रम्य ॥

नव निधि— सर्व, शंख, कच्छप, मुकुन्द, पद्म, मकर, कुन्द, नील ।
महापद्म मिलकर हुई, नव निधि विकल, सुशील ॥

नव रस— वीर, भयानक, रौद्र अरु, अद्भुत, हास्य, शृङ्गार ।
करुण, शान्त, वीभत्स रस, विकल काव्य आधार ॥

खनिज रत्न- लहसुनियां, मकरत, कुलिश, मूंगा, मणिक, गुमेद ।
नीलम, पुख, पन्ना विकल, खनिज रत्न के भेद ॥

धर्म लक्षण—शौच, क्षमा, अस्तेय, दम, धी, विद्या, अक्रोध ।
इन्द्रिय निग्रह, धृति विकल, धर्म सुलक्षण बोध ॥

दिशा— पूरब,पश्चिम,उत्तर,दक्षिण, अग्नि,वायु,नैऋत्य, ईशान ।
अर्ध अरु उर्ध्व,यही दिशादस,विकल हमारा कहना मान ॥

अवतार— मत्स, कूर्म, वाराह, कलि, नृसिंह, वामन, राम ।
विकल, परशुधर, कृष्ण, बुद्ध, दस अवतार ललाम ॥

इन्द्रिय-- आँख, नाक, जिह्वा, त्वचा, हाथ पाँव मुख, कान ।
विकल यही दस इन्दिय, मल मूत्रक स्थान ॥

दिग्पाल— गोविंद, यम, राक्षस, धनद, ईश, पवन, सुरपाल ।
वरुण, अग्नि, गरुडध्वज, 'विकल' यही दिग्पाल ॥

ग्यारह उपनिषद्— ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, बृहदारण्यक, श्वेताश्वर ।
माण्डूक, छान्दोग्द्, एतरेय 'विकल' उपनिपद् हैं सुन्दर ॥

बारह राशि—मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, वृप, मेप ।
कर्क, कुम्भ, मीन औ मकर, 'विकल' राशि सब देख ॥

बारह आभूपण-किंकण, काँकण,चूड़ी, नूपुर,शीशफूल, कंठी,नथ,हार ।
बिंदी, बाजूबंद, अंगूठी, 'विकल' करत पायल,झङ्कार ॥

चौदह विद्या- ब्रह्म,रसायन,अश्व,शस्त्र,चातुर्य, व्याकरण,समाधान ।
वैद्यक,ज्योतिप,काव्य तैरना,शिलप,वाद्यऔ'विकल'गान ॥

चौदह रत्न—श्री, रम्भा, विप, वारुणी, अमिय, शंख, गजराज ।
धनु, धेनु, धन्वन्तरी, चन्द्र, मणि, तरु, बाज ॥

सोलह श्रृङ्गार-उबटन, स्नान कर, अङ्ग में सुगन्ध शुभ—
वस्त्र कर धारण, महावर लगाइये।
केशगूंथ, मांग भर, मेंहदी औ बिन्दी भाल,
चिम्बुक कपोल तिल, सुन्दर बनाइये ॥
मिस्सी, पान, मुख में सुगन्ध, नैन काजल हो,
गल फूल हार, सर्व भूषण सजाइये।
सोलहों श्रृङ्गार की निहार छवि को अपार,
'विकल' वैदेही के गुणनुवाद गाइये ॥

सोलह पूजा—स्वागत, अर्द्धदान, वंदना, गृह प्रवेश, आसन बैठाल।
दे मधुपर्क, आचमन लेकर, फिर स्नान करा तत्काल ॥
वस्त्राभूषण, धूप, दीप, नैवैद्य, सुगन्ध, कुसुभ, चंदन।
सोलहपूजा पूर्ण,'विकल' जी,भोजन होउत्तम व्यञ्जन ॥

अठारह पुराण-अग्नि, विष्णु, स्कंध, कल्कि, शिव, पद्म, ब्रह्मवैवर्त।
कूर्म, मत्स्य, लिङ्ग, भागवत, गरुड़, ब्रह्म, दुखहृर्त ॥
ब्रह्मखण्ड, नारद, भविष्य, वामन, मारकण्डेय।
'विकल' अठारह है सभी, यह पुराण कह देय ॥

—◆◆※◆◆—

☆ काव्य के गुण ☆

गुण—वक्ता या श्रोता के हृदय में विभिन्न भावों को उत्पन्न करने वाले काव्य के नित्य धर्मों को गुण कहते हैं। इसके तीन भेद है।

(१) **माधुर्यगुण**—जो अपनी मधुरता से चित्त को प्रसन्न करदे वह माधुर्यगुण है। यह गुण प्रायः श्रृंगार करुण और शांतरस में होता है।

(२) **ओजगुण**—जो अपने प्रभाव से मन को तेलयुक्त करदे उसे ओजगुण कहते हैं। यह गुण वीर, वीभत्स और रौद्ररस में होता है।

(३) **प्रसादगुण**—जिसके सुनने मात्र ही से काव्य का अर्थ समझ में आ जाये उसे प्रसादगुण कहते हैं। यह गुण सभी रसों में होता है। उपरोक्त गुणों के उदाहरण नव-रस में देखिये।

★ लोकोक्तियाँ तथा मुहावरे अर्थ सहित ★

एक समय में जब 'विकल' करते हों दो काम।
दुविधा में दोऊ गये, माया मिली न राम॥
यत्न किये बिन वस्तु क्या? मन चाही मिल जाय।
'विकल' न रोये बिन कभी, माता दूध पिलाय॥
एक वस्तु से ले लिये, जब हमने दो काम।
'विकल' आम के आम हैं, औ गुठली के दाम॥
'विकल' समय जाता रहा, अब रोता किस हेत।
क्या पछताये होत जब, चिड़ियाँ चुग गईं खेत॥
'विकल' न छोटों की सुने, हो जहँ बड़ा समाज।
नक्कारों ने कब सुनी, तूती की आवाज॥
खाकर धोखा फिर 'विकल' करै न वैसी चूक।
जला हुआ ज्यों दूध का, पिये छाछ को फूंक॥
जो महान् होते 'विकल' लक्षण शिशु दिखलात।
होनहार बिरवान के, होत चीकने पात॥
जहाँ शक्ति सीमित रहे, उसका यही निचोड़।
मसजिद तक ही तो 'विकल' है मुल्ला की दौड़॥
गले जबरदस्ती पड़े 'विकल' न कुछ पहचान।
मान भले मत मान तू, मैं तेरा मेहमान॥
आश्रय दाता का बने, शत्रु! अरे कब खैर।
जल में रह कर के 'विकल', करै मगर से वैर॥
गुप्त सलाह एकान्त में, करो! बात मम मान।
हो जाते हैं 'विकलजी' दीवारों के कान॥
बुरा एक भी है बुरा, सबको करै खराब।
गन्दा कर देती 'विकल' मछली एक! तलाब॥
जहाँ सङ्गठन हो नहीं, होता बड़ा बिगाड़।
'विकल अकेला ही चना, क्या फोड़ेगा भाड़॥

श्रेष्ठ वस्तु को मूर्ख तो, कर देता बरबाद।
बन्दर कब जाने 'विकल', क्या? अदरक का स्वाद॥
अपराधी तो आप हैं, 'विकल' बना मुंह जोर।
कोतवाल को डाँटता, जैसे उल्टा चोर॥
फल थोड़ा श्रम अति घना, वृथा खपाये हाड़।
निकली चुहिया ही 'विकल', खोदा कठिन पहाड़॥
जहां नाम के हो विरुद्ध, बिल्कुल उलटा काम।
अन्धे का जैसे रखा 'विकल' नैन सुख नाम॥
बिना परिश्रम के मिले, अगर सम्पदा ढ़ेर।
अन्धे के हाथों लगी, मानों 'विकल' बटेर॥
चाल चले दोनों दिशा, होता बारह बाट।
धोबी का कुत्ता 'विकल' घर का रहा न घाट॥
ओछे उर में क्या कभी, भारी बात समाय।
अध जल की गगरी 'विकल' जैसे छलकत जाय॥
मनमाना करते 'विकल' जहां नियम सब त्याग।
अपनी अपनी ढापली, अपना अपना राग॥
निर्दोषी भी साथ में, दोषी के दुख पाय।
'विकल' चने के साथ में, जैसे घुन पिस जाय॥
जहाँ ऊपरी ठाट हों, वहाँ बनावट जान।
ऊँची 'विकल' दुकान का, ज्यों फीका पकवान॥
विपदा पर विपदा पड़े, तब कहते सबकोय।
कङ्गाली ही में 'विकल' आटा गीला होय॥
कञ्जूसी की जिस जगह, बिल्कुल हद हो जाय।
भले जाय चमड़ी 'विकल', दमड़ी कहीं न जाय॥
अवसर पा कमजोर भी, बनता बड़ा दिलेर।
अपने घर पर तो 'विकल' कुत्ता भी हो शेर॥
झूठे की क्या? दोस्ती, लँगड़े का क्या? साथ।
बहरे से क्या? बोलना, गूंगे से क्या? बात॥

दोनों कर खाली रहे, पास न कुछ भी माल।
तब उसको कहते 'विकल' ठनठन मदन गुपाल ॥
बन जाये कितना बुरा, प्रिय को नहीं सताय।
माँ डायन यदि हो 'विकल', कभी न बेटा खाय ॥
छिपकर करता हो जहाँ, नीच कर्म बदकार।
क्या टट्टी की आड़ में, खेलो 'विकल' शिकार ॥
महामूर्ख को क्यों 'विकल' वृथा कला दिखलाय।
जैसे कोई भैंस के, आगे बीन बजाय ॥
समय पड़े पर होत है, छोटी वस्तु महान्।
भूख लगी हो जब 'विकल' गूलर भी पकवान ॥
कभी आत्म विश्वास को 'वकल' न खोना मीत।
मन के हारे हार है, मन के जीते जीत ॥
सब कहते हैं ! जिस जगह, चल पाये नहिं चाल ॥
यहाँ तुम्हारी 'विकलजी' नहीं गलेगी दाल।
व्यक्ति अयोग्य इच्छा करै, पाऊँ अच्छा माल।
यह मुँह और मसूर की, वाह 'विकलजी' दाल ॥
वस्तु भले उत्तम कहीं, दो कूड़े में डाल।
गुदड़ी में भी तो 'विकल' छिपे न छिपता लाल ॥
बदला कहाँ स्वभाव है, 'विकल' पड़ी जो टेव।
बातों से माने कहाँ, जो लातों के देव ॥
समय समय की रागनी, समय समय के गीत।
समय पड़े जानों 'विकल' को वैरी को मीत ॥
औरों को उपदेश दे, आप न देखे कोय।
दीपक के नीचे 'विकल' सदा अँधेरा होय ॥
गुस्सा तो है और पर, ले गरीब की जान।
लड़ै कुम्हार कुम्हारिया, खिचें गधे के कान ॥
छिपे हुए रुस्तम बने, मित्र गये हम भाँप।
वह तो बन बैठे 'विकल' आस्तीन के साँप ॥

करना सो भरना पड़ै, यह जानत सब कोय ।
अपनी ही करनी 'विकल', पार उतरनी होय ॥
जो जैसा वैसा रहे, करै यत्न वहु कोय ।
सींचो शरवत से 'विकल' नीम न मीठा होय ॥
ऊँच नीच का जहँ नहीं, सूझै 'विकल' सुझाव ।
घोड़े गदहे क्या सभी, समझे एकहि भाव ॥
वस्तु मिलीं अनमेल दो 'विकल' क्या खेल ।
शीश छछूंदर के पड़ा, ज्यों वेला को तेल ॥
आवश्यकता जो जिसे, उसे और सब राख ।
'विकल' उसे क्या चाहिए, अंधे को दो आँख ॥
वलवानों की है विजय, वृथा न लाओ तैस ।
जिसकी हो लाठी 'विकल' होती उसकी भैंस ॥
मजबूरी में सब सुने 'विकल' कहो कुछ कोय ।
वड़े भ्रात की ज्यों वधू, सब की भाभी होय ॥
साझे में झगड़ा 'विकल' होता निश्चय आप ।
साझे की होली भली, लेते हैं सब ताप ॥
एक वस्तु के हित जहाँ, ग्राहक वने हजार ।
सौ वीमारों को 'विकल' क्या हो एक अनार ॥
उर में जब आनन्द हो, आनन्दित सब कोय ।
मन चंगा जब हो 'विकल' घर में गंगा होय ॥
एक जगह कैसे रहे, दो नृप का अधिकार ।
एक म्यान में रह सकें 'विकल' न दो तलवार ।
तुच्छ वस्तु की क्या कमी, जो है महा विशाल ।
राजा के घर में 'विकल' क्या मोती का काल ॥
चाह वहुत भारी 'विकल' वस्तु न्यून है पास ।
चाटे से कब ओस के, भला वुझेगी प्यास ॥
केवल कोरी कल्पना, निकला यही निचोड़ ।
'विकल' वृथा ही तुम रहे, मन के लड्डू फोड़ ॥

पास नहीं कुछ भी 'विकल' बात बड़ी कह देय।
नंगा कहे बाजार में, है कोई कपड़ा लेय॥
दुख नहीं देखे और का, भली 'विकल' पी भांग।
देवी दिन काटे रहा, पंडा परचा मांग॥
'विकल' एक सी हो जहाँ, दोनों की करतूत।
जैसे नकटे देवता! सेवक वैसे, ऊत॥
अति समीप हो जाय से, हों विचार प्रतिकूल।
देखन में नीके लगें 'विकल' दूर से फूल॥
जहाँ वस्तु की प्राप्ति में, हो जाये मजबूर।
'विकल' दूर के है सदा, खट्टे ही अंगूर।
सुन्दरता के साथ में, गुण का हो यदि ग्रंथ।
इसको कहते हैं 'विकल' सोना और सुगंध॥
अन्तर जहाँ महान हों, सब कहते! उर खोज।
कहँ गांगू तेली 'विकल' औ कहँ राजा भोज॥
शुभ अवसर पर भी जहाँ, कोई अति दुख पाय।
रहे सलूनों को 'विकल' हाय! अलूनो खाय॥
जहँ विपरीत स्वभाव हो, वहाँ होत यह हाल।
'विकल' मूर्ख की दोस्ती, है जी का जंजाल॥
बीती बातों को 'विकल' कह कर करै बिगाड़।
कहें उसी को क्यों गढ़े मुर्दे रहा उखाड़॥
जहाँ काम विपरीत हो, कैसा वहाँ विकास।
चले बरेली को 'विकल' लेकर उल्टे बाँस॥
जहाँ निराले रंग ढंग 'विकल' कहत सब कोय।
तीन लोक से आपकी, मथुरा न्यारी होय॥
सबसे भिन्न विचार हों 'विकल' यही उपदेश।
अजी तुम्हारी तो अलग, खिचड़ी पके हमेश॥
जैसे थे वैसे रहे, 'विकल' कहो क्या बात।
देख लिये हमने वही, तीन ढाक के पात॥

गलती दोनों ओर से, जहाँ 'विकल' हो जाय।
एक हाथ से तो कभी, ताली बजती नाय॥
रह सतर्क चालक से 'विकल' न पार बसाय।
जाट मरा तब जानिये, जब दसवाँ हो जाय॥
शक्ति देख कर ही 'विकल' करो कार्य हर ठौर।
उतने पैर पसारिये, जितनी लांबी सौर॥
सब से हुआ स्वतन्त्र जो 'विकल' उसी के वैन।
ऊधो का कुछ लैन हैं, न माधो का दैन॥
तनिक देर का प्रेम जहँ, कहता विश्व पुकार।
तापन 'विकल' पुआंर, का, परदेशी का प्यार॥
दोष किसी का हो 'विकल' औ कोई दुख पाय॥
मुख भीतर जिह्वा चलै, चाँद गरम हो जाय॥
'विकल' गुणी का होत कब, निज गृह मान प्रसिद्ध।
घर का जोगी जोगिया, आन गाँव का सिद्ध॥
नदी तीर प्यासा 'विकल' यह कुदरत का खेल।
तेली के घर में रहे, पड़ा न सिर में तेल॥
सङ्गत नीचों की बुरी, कभी न करना साथ।
'विकल' दलाली कोयला, करती काले हाथ॥
बात बनावट उर भरी 'विकल' कुटिलता कूट।
आंसू एक न आंख में, हुआ कलेजा टूक॥
काम तुच्छ साधन घना, कहां बैठता मेल।
तब राधा नाचे 'विकल' जब हो नौ मन तैल॥
हठी महा क्रोधी जहाँ, भूला सभी विचार।
उसको कहते हैं 'विकल' सिर पर भूत सवार॥
काम शीघ्र अति शीघ्र जहं, करने की हो चाह।
तभी कहा जाता 'विकल', चट मंगनी पट व्याह॥
सब कुछ मिट जाये भले, वैसा ही इतराय।
रस्सी जल जाती 'विकल', फिर भी ऐंठ न जाय॥

कंजूसी की हद जहाँ, कर देता मनहूस।
'विकल' उसी का नाम है, जग में मक्खीचूस॥
हुआ मुफ्त में काम सब 'विकल' निराला ढंग।
हल्दी लगी न फिटकरी, निकला चोखा रंग॥
बाहर नौता दे रहा, घर में 'विकल' न चून।
दिये नहीं अच्छा हुआ, गंजे को नाखून॥
वेशर्मी की जिस जगह, पूरी हद हो जाय।
घड़े चीकने पर 'विकल' पानी ठहरत नाय॥
खर्च किसी का हो 'विकल' करै कोई अलसेट।
दाता देवे औ फटे, भण्डारी का पेट॥
छोटा-छोटी वस्तु पा, उछले 'विकल' न लाज।
चूहे को कतरन मिली, मानों बना बजाज॥

★ हिन्दी के मुख्य पुरुष्कार ★

(१) मङ्गलाप्रसाद पारितोषिक—बारह सौ रुपये का यह पुरुष्कार हिन्दी की किसी मौलिक रचना के सम्मानार्थ सेठ गोकुलचन्द जी रईस की ओर से (सम्वत् १९७८ वि० से) प्रतिवर्ष नियम पूर्वक दिया जाता है। सर्व प्रथम यह पुरुष्कार स्वर्गीय पं० पद्मसिंह शर्मा को 'विहारी सतसई' पर मिला था।

(२) सेकसरिया महिला पारितोषिक— किसी महिला द्वारा रचित हिन्दी की मौलिक रचना पर यह ५००) का पुरुष्कार श्री सीतारामजी सेकसरिया की ओर से (सं० १९८८ वि० से) प्रतिवर्ष दिया जाता है। सर्व प्रथम स्व० सुभद्राकुमारी चौहान को 'मुकुल' पर मिला था।

(३) मुरारका पारितोषिक—हिन्दी में 'समाजवाद' विषय पर मौलिक ग्रन्थ के लिए ५००) रुपए का यह पुरुष्कार श्री बसन्तलाल मुरारका की ओर से (सं० १९९४ वि० से) प्रतिवर्ष दिया जाता है।

(४) डालमियां पुरुष्कार—हिन्दी की किसी अति उत्तम रचना पर यह २१००) का यह पुरुष्कार प्रति वर्ष दिया जाता है।

❀ मेरा लोटा ❀

बड़ा न मझला गोल न लम्बा, नाटा, ठिगना कद छोटा।
लिखा हुआ है नाम हमारा, पीतल का सुन्दर लोटा॥
सीधा सच्चा सेवक; छल से दूर, महा भोला भाला।
जो आया ले चला कभी न, बातों में उसने टाला॥
सर्दी गर्मी वर्षा प्रातः संध्या, काम निकाल लिया।
जब चाहा जब गला बाँधकर, उसे कुए में डाल दिया॥
मन मानी डुबकी दे दे कर, खींच लिया बाहर आया।
मन प्रसन्न हो गया लबालब, भर कर जब पानी लाया॥
आजाता है स्वयं कभी जब, हो जाता मुझ से न्यारा।
ठोकर खाकर कभी विचारा, फिरता है मारा मारा॥
कभी ठठेरे से ठुकवाया, ले जाकर बाजारों में।
दूध गरम करने को मैंने, रखा कभी अङ्गारों में॥
ताल तलैया कुइया नाली, बम्बा नहर नदी नाला।
दिल में आया जहाँ कहीं भी, बेदर्दी से मल डाला॥
पानी भरा रखा सिरहाने, थी उस दिन अन्धेरी रात।
मैंने पूछा? प्यारे लोटे, मुझको एक बता दे बात॥
क्यों सहता है जुल्म न तूने, कभी भेद उर का खोला।
पैरों में गिर पड़ा प्रेम से, हाथ जोड़ लोटा बोला॥
जैसे करे भरेगा वैसा, इससे मुझे न कुछ सन्ताप।
मैं सेवक हूं! जो सेवा हो, मेरे योग्य बतावें आप।
सहन शीलता सिखलाता हूं, भूल क्रोध को मत छूना।
जितना मांजों मुझको कविवर, चमकूंगा उतना दूना॥
सभी एकसे नहीं विश्व में, विविध भाँति के हैं लोटे।
कुछ लोटे तो महा धूर्त हैं, निसन्देह बड़े खोटे॥
ढुलमुल नीती वाला नेता, और! न अवसरवादी हूं।
'भरतपुरी' में नहीं 'विकल' जी, ठेठ मुरादाबादी हूं॥

★ शब्द शक्तियां ★

शब्द शक्तियां तीन प्रकार की होती है। इन्हीं शक्तियों के अनुसा
ब्द भी तीन प्रकार के माने जाते हैं। जो शब्द अपनी-अपनी शक्ति
जिन अर्थों का बोध कराते हैं वह भी तीन प्रकार के होते हैं।

शक्तियों के नाम—अभिधा, लक्षणा, व्यञ्जना। शब्दों के नाम-
ाचक, लक्षण, व्यञ्जक। अर्थों के नाम—वाच्य, लक्ष्य, व्यञ्ज।

अभिधा—जिस शब्द की शक्ति से किसी शब्द का स्वाभाविक बो
ाल में प्रसिद्ध अर्थ जाना जाय, उसे अभिधा शक्ति कहते है।

वाचक शब्द—अभिधा शक्ति के द्वारा अपने स्वाभाविक अर्थ
ातलाने वाला शब्द वाचक शब्द कहलाता है।

वाच्यार्थ—वाचक शब्द अभिधा शक्ति द्वारा जिस मुख्य अर्थ
ातलाते हैं, उसे वाच्यार्थ कहते हैं।

जैसे—शेर एक पशु है। इस वाक्य में शेर शब्द सिंह इस सङ्केति
ुख्य अर्थ को अभिधा शक्ति द्वारा बतलाता है।

लक्षणा—मुख्य अर्थ को न बताकर उसके साथ सम्बन्ध रखने व
अन्य अर्थों को बतलाने वाली शक्ति लक्षणा कहलाती है। शब्द लक्ष
और अर्थ लक्षणार्थ कहलाता है।

जैसे—'हरीसिंह तो शेर है' इस वाक्य में शेर शब्द का सङ्केति
सिंह अर्थ हरीसिंह पर घटित नहीं होता क्योंकि हरिसिंह एक पुरुष
और सिंह पशु है। फिर भी हरीसिंह शेर है अर्थात् शेर के समान
है। यह अर्थ लक्षणा शक्ति ही बतलाती है।

व्यञ्जन—जो अर्थ अभिधा और लक्षणा से न जाना जाय लेकि
उस अभिप्रेत अर्थ को बतलाने वाली शक्ति व्यञ्जना शक्ति कहलाती
शब्द व्यञ्जक और अर्थ व्यञ्जार्थ कहलाता हैं।

जैसे वृपाभानुजा आ रही है। इस वाक्य के दो अर्थ हुए (१) वृष
(बैल) अनुजा (बहन) बैल की बहन अर्थात् गाय आ रही है। (२)
वृपभा (वृपभानु) नुजा (पुत्री) अर्थात वृपभान की पुत्री राधा आ रही है।

★ पत्र लिखना ★

पत्र तीन प्रकार के होते हैं (१) छोटों की ओर से बड़ों को (२) बड़ों की ओर से छोटों को (३) बराबर वालों को। हर एक पत्र में नीचे लिखी ५ बातें किसी न किसी रूप में आवश्य आती हैं:—

(१) पत्र लिखने वाले का नाम और पता (२) पत्र पाने वाले का नाम और पता (३) प्रशस्ति (४) समाचार (५) तारीख दिन मिति।

पत्र लिखने की दो रीति हैं (१) प्राचीन रीति (२) नवीन रीति।

प्राचीन रीति—प्रशस्ति के साथ ही साथ पत्र पाने वाले का नाम और पता तथा पत्र लिखने वाले का नाम और पता लिख देते हैं। समाचार बीच में रहता है और तारीख या मिति अन्त में लिखते हैं।

प्रशस्ति—सिद्धश्री प्रयाग शुभ स्थाने मान्यवर भाई रामस्वरूपजी को बनारस से सेवक राधारमण का चरण छूना स्वीकार हो।

समाचार—जो कुछ अपनी बात लिखनी हो वह लिख दीजिये।

मिति—पत्री लिखी सावन सुदी २ मङ्गलवार सं० १९९८ वि०

आदर के लिए प्रशस्ति में श्री शब्द के आगे अङ्क लिख देते हैं जैसे सिद्धश्री ६

श्री लिखिए षट गुरुन को, पांच स्वामि रिपु चार।
तीन मित्र द्वय भ्रात को, एक पुत्र अरु नार॥

बड़ों के लिये—सकल गुण निधान, सर्वोपरि, पूज्यपाद महामहिम आदि विशेषण लगाइये और अन्त में प्रणाम, दण्डवत्, चरण छूना।

बराबर वालों के लिये—कृपाकारक, हितैषी कृपासागर स्नेह भाजन आदि विशेषण लगाइये तथा अन्त में नमस्कार, राम राम, जुहार आदि।

छोटों के लिये—प्रेमपात्र, चिरञ्जीवी आदि विशेषण अन्त में आर्शीवाद तथा स्त्रियों के लिये स्त्रीलिङ्ग विशेषण हों।

नवीन रीति—(बड़ों के लिये) पूज्यवर (पिताजी) प्रणाम और अन्त में आपका सेवक (बराबर वालों के) मान्यवर सादर वन्दे और अन्त में आपका कृपाभिलाषी (छोटों के लिये) प्रियवर आशीर्वाद और अन्त में तुम्हारा हितैषी लिखिये।

★ कुछ विभिन्न प्रकार के पत्रों की परिभाषा ★

प्रतिज्ञा पत्र—जिस पत्र द्वारा किसी कार्य को करने अथवा न करने की प्रतिज्ञा की जाय।

परीक्षा पत्र—जिन पत्रों द्वारा किसी की योग्यता की जांच की जाय उसे परीक्षा पत्र या प्रश्न पत्र कहते हैं।

विचाराधीन पत्र—ऐसे पत्र जिन पर विचार करना शेष हो।

विज्ञापन पत्र—जिस पत्र से किसी वस्तु अथवा व्यक्ति की पूर्ण जानकारी कराई जाय किन्तु उसमें कुछ लाभ छिपा हो।

त्याग पत्र—जिस पत्र से किसी कार्य अथवा स्थान को त्याग ने का विचार प्रगट हो वह त्यागपत्र है।

मान पत्र—एक ही विचार वाले बहुत से व्यक्तियों के समूह में किसी एक विशेष व्यक्ति को लिखित रूप में सनमानित करना।

दान पत्र—विना मूल्य लिये किसी व्यक्ति को धर्म भावना से प्रेरित होकर अपनी सम्पत्ति देने का जिस पत्र में उल्लेख हो।

मत पत्र—जिस पत्र से किसी दूसरे के प्रति सहमत विचार जाने जाय।

निर्देश पत्र—जिस पत्र में किसी कार्य को करने की नीति बताई जाय।

निमन्त्रण पत्र—जिस पत्र के द्वारा किसी को प्रसन्नता पूर्वक बुलाया जाय इसमें बुलाने की तिथि और कारण लिखा रहता है।

आवेदन पत्र—इसमें किसी कार्य को करने के लिये प्रार्थना की जाती है।

क्षमा याचना पत्र—पत्र द्वारा अपनी भूल स्वीकार करके भविष्य में न करने का विश्वास दिलाना।

वधाई पत्र—किसी के यहाँ प्रसन्नता के कार्य में सम्मलित न होने पर पत्र द्वारा उसके अनुरूप अपनी प्रसन्नता प्रदर्शित करना।

धन्यवाद पत्र—अनुकूल कार्य होने पर कार्य करने वाले व्यक्ति की लिखित रूप में प्रशंसा करना।

शोक पत्र—किसी की मृत्यु का समाचार जिस पत्र द्वारा जाना जाय।

समवेदना पत्र—किसी दुखित व्यक्ति को पत्र द्वारा उसके दुख में दुखित अपने हृदय के भाव प्रगट करना।

प्रवेश पत्र—जिस पत्र द्वारा किसी नियम बद्ध स्थान में प्रवेश किया जाय।

प्रमाण पत्र—जिस पत्र द्वारा किस की योग्यता की साक्षी दी जाय।

आज्ञा पत्र—जिस पत्र से किसी कार्य के करने की आज्ञा दी जाये।

सूचना पत्र—जिस पत्र से किसी प्रकार की सूचना प्राप्त हो।

जन्म पत्र—जिस पत्र में ज्योतिष द्वारा जन्म के समय का पूर्ण विवरण हो।

परिचय पत्र—जिस पत्र में किसी वस्तु का पूर्ण वर्णन अथवा किसी व्यक्ति की आयु, नाम, स्थान, योग्यता आदि का पूर्ण परिचय हो।

तिथि पत्र—जिस पत्र से तिथि जानी जाय, इसे 'पत्रा' भी कहते है।

निर्णय पत्र—किसी के गुण दोषों को ध्यान में रखते हुये उसके विषय में अपनी निपक्ष राय देना।

विरोध पत्र—अपने विचारों के प्रतिकूल कार्य के विषय में लिखा पत्र।

विदाई पत्र—किसी को विदा करते समय उसके प्रति अपनी शुभ कामनाओं और उसके अच्छे व्यवहार का लिखित वर्णन।

स्वीकृति पत्र—किसी की इच्छानुसार कार्य करने अथवा कराने का पत्र।

खुला पत्र—जिस पत्र का विषय प्रत्येक व्यक्ति पढ़ सके।

गुमनाम पत्र—जिस पत्र में लिखने वाले या पाने वाले का नाम न हो।

प्रेम पत्र—जिसमें एक दूसरे के प्रति प्रेम का प्रदर्शन हो।

मांग पत्र—जिस पत्र से किसी से किसी वस्तु को मांगा या मंगाया जाय।

भोज पत्र—एक वृक्ष का पत्ता होता है जब कागज नहीं था तब इसी पत्ते पर लिखा जाता था।

ताम्र पत्र—अधिक समय तक सुरक्षित रखने के लिये तांबे की चद्दर पर लिखा हुआ पत्र ताम्र पत्र कहलाता है।

लग्न पत्र—जिस पत्र में कन्या पक्ष की ओर से वर पक्ष को विवाह से पूर्व विवाह का कार्यक्रम लिख कर भेजा जाय।

पारिपत्र—किसी देश से दूसरे देश में जाने के लिये दोनों देशों की सरकार अपनी अनुमति जिस पत्र में देती है वह पारिपत्र है।

विनय पत्र—जिस पत्र में अपनी दयनीय अवस्था का वर्णन करते हुये समर्थ व्यक्ति से दया याचना की जाय।

विपरीत अर्थ वाले शब्द

(स्वर्ग-नर्क) (वीर-कायर) (सुर-असुर) (कंजूस-उदार) (नवीन-प्राची (आय व्यय) (उत्थान-पतन) (मान-अपमान) (विद्वान-मूर्ख) (प्रका अंधकार) (गुरु-शिष्य) (इति-अथ) (यश-अपयश) (अधिक-न्यून) (दया निष्ठुर) (सज्जन-दुर्जन) (राजा-प्रजा) (आकाश-पाताल)।

थोड़ासा अन्तर वाले शब्द

परुष (कठोर) पुरुष (आदमी) प्रसाद (कृपा) प्रासाद (महल) अवल (सहारा) अविलम्ब (शीघ्र) तरणी (नौका) तरणि (सूर्य) अनल (आ अनिल (वायु) गृह (घर) ग्रह (तारे) शस्त्र (हथियार) शास्त्र (ग्रंथ) ल (लाख) लक्ष्य (उद्देश्य) प्रमाण (सबूत) प्रणाम (नमस्कार) परिमा (नाप तोल) परिणाम (नतीजा) छात्र (विद्यार्थी) क्षात्र (क्षत्रिय) अश (शक्तिहीन) आशक्त (मोहित) चरम (अन्तिम) चर्म (चमड़ा) सर (ताला शर (वाण) शशि (चन्द्रमा) शश (खरगोश) शुल्क (सफेद) शुल्क (फी कुल (वंश) कूल (किनारा) चिर (प्राचीन) चीर (वस्त्र)।

अशुद्ध और शुद्ध शब्द

परथम (प्रथम) आतमा (आत्मा) निरदेश (निर्देश) अनुगृह (अनुग्र दरशन (दर्शन) सनेह (स्नेह) संसकिरत (संस्कृत) रामाण (रामायर विग्यान (विज्ञान) अश्नान (स्नान) परतिग्या (प्रतिज्ञा) इस्तरी (स सिंघ (सिंह) प्रन्तु (परन्तु) हरस्व (ह्रस्व) वराहमण (ब्राह्मण)।

अन्त्याक्षरी—किसी कविता के अन्तिम अक्षर को दूसरी कवि के आरम्भ में स्थान देना ही अन्त्याक्षरी कहलाता है। दो बच्चे आम सामने खड़े हो जाते हैं। उनमें से एक ने यह कविता सुनाई--

'बसहु मेरे नैनन में नन्दलाल'। तब दूसरा लड़का इस कविता अन्तिम अक्षर से उसका उत्तर देने के लिये अपनी कविता आरम्भ करेगा जैसे

लाल तिहारे हाथ में बैरनि बांसुरी हाय।

फिर पहिला लड़का अपनी कविता 'य' से प्रारम्भ करेगा।

❋ अन्तर्कथायें ❋

अजामील--एक दुराचारी वैश्य था। उसकी स्त्री ने एक साधु के आदेशानुसार अपने पुत्र का नाम 'नारायण' रक्खा! जब अजामील मरने लगा तो उसने अपने पुत्र 'नारायण' को पुकारा। भगवान ने समझा मुझे बुला रहा है, उन्होंने अपने दूत भेजे और वह उसे स्वर्ग में ले गये।

अहिल्या--गौतम ऋषि की नारी थी। इन्द्र ने इसकी सुन्दरता पर मुग्ध होकर गौतम ऋषि का रूप धर कर, इसके साथ विषय किया। ऋषि को जब यह ज्ञात हुआ तो उन्होंने श्राप द्वारा अहिल्या को पत्थर की शिला बना दिया। विश्वामित्र के कहने पर भगवान राम ने जनकपुर को जाते समय, शिला के ठोकर मार कर अहिल्या का उद्धार किया।

शबरी--एक भीलनी थी और राम की परम भक्त थी। वनवासी राम ने इसी की कुटिया में बड़े ही प्रेम से बेर खाये थे।

गणिका--यह एक दुराचारिणी थी। वृद्धावस्था में इसने एक तोते को राम नाम रटाया। वह तोता नित्य राम नाम बोलता रहता था, उसी के प्रताप से गणिका को सद्गति मिली।

गिद्धराज--जब रावण सीताजी को हरण करके लेजा रहा था तब गिद्धराज जटायु ने सीताजी को छीन लिया, क्रुद्ध हो रावण ने उसके पङ्ख काट दिये और अधमरा छोड़कर चला गया। सीताजी की खोज करते हुये जब राम आये जटायु ने सब बात बतलाई और प्राण त्याग दिये।

कंस--एक अत्याचारी राजा था, इसको नारद जी ने बतलाया था कि तेरी बहन के जो पुत्र उत्पन्न होगा वह तुझको मारेगा। तब इसने अपनी बहन देवकी और बहनोई वसुदेव को कैद में डाल दिया, जो भी बच्चा उत्पन्न होता था उसे मार देता था।

श्रीकृष्ण--श्रीकृष्ण ने जन्मते ही पिता वसुदेव से कहा कि तुम मुझे यशोदा नन्द के यहाँ पहुंचा दो और यशोदा के लड़की हुई है, उसे यहाँ लाकर कंस को दे देना, वसुदेव ने वैसा ही किया।

★ छंद ★

छंद— मात्रा हों या वर्ण सम, गति, यति नियम निभाय।
तुक मिलती चरणान्त में, विकल सुछंद कहाय ॥

भेद— संख्या, क्रम गति, यति नियम, तुक सब चरण समान।
मात्रा से मात्रिक विकल, वर्ण से वर्णिक जान ॥

मात्रा— स्वर के उच्चारण में जो समय लगता है वह मात्र है। मात्रायें दो प्रकार की होती हैं (।) लघु और दीर्घ (S)

यति— गद्य अथवा पद्य को पढ़ते समय जहां सांस लेने के लिये रुकना पड़ता है उसे विराम या यति कहते है।

गति— छंद के पढ़ने की लय को गति कहते है।

तुक— चरण के अन्त में समान वर्णों के प्रयोग को तुक कहते हैं।

चरण— छंद के चौथे भाग को चरण कहते हैं।

गण— तीन वर्णों के समूह को गण कहते हैं। जैसे—कमल, नारद, सारथी आदि। गण आठ प्रकार के होते हैं।

गण और गणों का सूत्र—'यमाता राजभानस लगा'

नाम गण	लक्षण	स्वरूप	सूत्र से उदा०	स्वामी	फल	मात्रा
१ यगण	आदि लघु	।SS	यमाता	जल	वृद्धि	५
२ मगण	तीनों गुरु	SSS	मातारा	पृथ्वी	श्री	६
३ तगण	अन्त लघु	SS।	ताराज	व्योम	शून्य	५
४ रगण	मध्य लघु	S।S	राजभा	अग्नि	दाह	५
५ जगण	मध्य गुरु	।S।	जभान	भानु	भय	४
६ भगण	आदि गुरु	S।।	भानस	शशि	यश	४
७ नगण	तीनों लघु	।।।	नसल	स्वर्ग	सुख	३
८ सगण	अन्त गुरु	।।S	सलगा	वायु	भ्रमण	४

नोट—यगण, मगण, नगण और सगण यह चारों गण शुभ है शेष अशुभ

पिछले सूत्र से सभी गणों के नाम स्वरूप और उदाहरण भली प्रकार स्पष्ट हो जाते हैं। किन्तु निम्न दोहे और भी सहायक होंगे।

तीनों गुरु होते मगण, नगण तीन लघु जान।
'विकल' मध्य गुरु है जगण, रगण मध्य लघु मान॥
यगण प्रथम लघु है 'विकल' तगण अंत लघु धार।
सगण अंत गुरु औ भगण, रख गुरु प्रथम विचार॥
यगण नीर, वृद्धि विकल, मगण भूमि, श्री द्वार।
नगण स्वर्ग सुख औ सगण, शशि, यश, शुभ गण चार॥
रगण अग्नि फल दाह है, सगण वायु, भ्रमणात।
'विकल' तगण नभ शून्य है, जगण भानु डर पात॥

मूलस्वर—(ह्रस्व स्वर अ इ उ ऋ आदि) की तथा चन्द्र विन्दु (ँ) वाले स्वर की एक मात्रा है। दीर्घ स्वर—(आ ई ऊ ए ऐ आदि) की तथा अनुस्वार (ं) वाले स्वर की दो मात्रा होती हैं। (४) कवि छन्द के चरण की अन्तिम मात्रा को इच्छानुसार गुरु को लघु और लघु को गुरु मान सकता है (५) यदि छन्द के अन्तिम चरण में एक ही क्रम से वर्ण हो तो वह वर्णिक छन्द है अन्यथा मात्रिक छन्द है।

चौपाई— चौपाई में मात्रा, सोलह रखो विचार॥
अन्तिम दोनों लघु विकल, या दोनों गुरु धार॥

क्या मानव मानव तन पाया, काम नहीं जो पर हित आया।
भूमि भार है उनका जीवन, विकल विचार करो अपने मन॥

दोहा— प्रथम चरण तेरह रखे, दूजे ग्यारह संत।
चौबिस मात्रायें 'विकल' दोहा लघु गुरु अंत॥
भस्मा सुर को वर दियो, भागे भोला नाथ।
ऐसे विकल महेश को, विकल नवावे माथ॥

सोरठा— प्रथम चरण ग्यारह रहे, तेरह दूजा जान।
दोहे का उल्टा विकल, छंद सोरठा मान॥
भागे भोला नाथ, भस्मा सुर को वर दियो।
विकल नवावे माथ, ऐसे विकल महेश को॥

गीति का— यति चौदह बारह रहे, अन्त रगण ही धार ।
छब्बीस मात्रा, गीतिका, विकल सुछंद विचार ।।
याद तो होगी कहानी, शब्द वेधी बाण की ।
मार कर सुल्तान को, बाजी लगा दी जान की ।।
वीर पृथ्वी राज की क्या हम विकल सन्तान हैं ।
है कहां चौहान अब, चौहान 'चूहे दान' है ।।

हरि गीतिका–सोलह बारह, यति रहे, अन्त लघु गुरु दोय ।
अट्ठाइस मात्रा, 'विकल' हरिगीतिका सोय ।।
जय देव वाणी वेद वाणी, जयति शुभ वाणी नमो ।
जयति जय मंगल करण, मन हरण कल्याणी नमो ।।
जय 'विकल' अनुपम भारती के, भाल की बिन्दी नमो ।
जय मातृ भाषा, राष्ट्र भाषा जयति जय हिन्दी नमो ।।

रोला— ग्यारह तेरह यति विकल कुल मात्रा चौबीस ।
तुक मिलती हो अंत में, रोला विस्वेबीस ।।
धर्म भूमि जय कर्म भूमि, प्राणो से प्यारी ।
वीर प्रसूता वीर भूमि, मेवाड़ हमारी ।।
गुण गाती है मही, सुयश आकाश तुम्हारा ।
विश्व बीच आदर्श अमर, इतिहास हमारा ।।

उल्लाला— पन्द्रह पहिले तीसरे, तेरह दूज चतुर्थ ।
अठाइस मात्रा विकल, उल्लाला सामर्थ ।।
जहाँ प्रकृति ने आप अति, अनुपम छटा प्रदान की ।
'विकल' रम्यभू जयति जय, एकलिंग भगवान की ।।

छप्पय— रखो विकल रोला प्रथम, अन्त उल्लाला जान ।
छ चरणों का होत है, छप्पय छंद सुजान ।।
जंगल जंगल फिरा, भटकता मारा मारा ।
धर्म और निज स्वाभिमान का लिये सहारा ।।
जहां सिखाता रहा अमरता की परिपाटी ।
जय चेतक जय भील, जयति जय हल्दी घाटी ।।

महाराणा की जिस जगह, चमकी अथक कृपाण है।
'विकल' उसी मेवाड़ को, बारम्बार प्रणाम है॥

चौपई— पन्द्रह मात्रायें यही, चौपई की पहिचान।
गुरू और लघु अंत में, रखें 'विकल' विद्वान॥
मुझ को है पूरा विश्वास, जाऊंगा मैं नहीं निराश।
जय हो विकल विकल भगवान, हमें दीजिये शुभ वरदान॥

कुंडली— आदि अन्त का शब्द इक, रखो याद पहिचान।
दोहा रोला योग से, विकल कुंडली मान॥
चूरन का सामान यह, सब समान ले आय।
हैड़, बहेड़ा, आंमला, सेंधा, सौंफ़, सनाय॥
सेंधा सौंफ सनाय, कूट बारीक बनावे।
छ माशे की तोल, गर्म पानी से खावे॥
मिटे उदर का रोग, 'विकल' हो आशा पूरन।
इससे उत्तम मिले न, जग में कोई चूरन॥

नोट:—मात्रिक छन्दों की मात्रा तथा वर्णिक छन्दों के गण गिनये।

घनाक्षरी— वर्ण इकत्तिस हों विकल, गुरु अन्त में आय।
घनाक्षरी या मनहरण, सो कवित्त कहलाय॥

लोचनाभिराम ! सुखधाम, है ललाम छवि,
रूप माधुरी के नित्य, पीते भक्त प्याले हैं।
दर्श मात्र ही से होता, 'विकल' अपार हर्ष,
आप अपनों के हरि, हरते कसाले हैं॥
दीन दुखियों के दुख, दारुण दरिद्र दूर,
भरपूर सुखद, समृद्धि देने वाले हैं।
कोई आजमाले ! इन्हें अपना बनाले अरे,
चार भुजा वाले के तो, ठाट ही निराले हैं॥

द्रुतविलम्बित— न भ भ र क्रम रहे, रखो यही गण चार।
द्रुतविलम्बित में 'विकल' बारह वर्ण निहार॥
विकल हूं भगवान क्षमा करो। हृदय में नित आप रमा करो॥

मन्दाक्रान्ता— म भ न त त दिये, दो गुरु अन्त सुहाय।
मन्दाक्रान्ता में विकल, सत्रह वर्ण लखाय ॥
देखो माया 'विकल' उसकी, विश्व में छा रही है।
वाणी वीणा सरस महिमा, मोद से गा रही है ॥

मत्तगयन्द— सात भगण दो अन्त गुरु, विकल बना यह छन्द।
कहो सवैया मालती, या तुम मत्त-गयंद ॥
बालक थे तब मां पितु की, चढ़ गोद समोद बड़े इतराये।
होत युवा तन यौवन की, गति से मति आप फिरे भरमाये ॥
जीवन के दिन आवन, जावन, खावन में 'विकलेश' बिताये।
सोवत जागत रोवत हैं, अब खाट पड़े मनु भांगहि खाये ॥

मालिनि— प्रथम नगण दो इक मगण, और यगण दो अन्त।
यही मालिनी छन्द है, रहो 'विकल' निश्चिन्त ॥
सब विधि दुःख मेरे दूर कीजे बिहारी।
'विकल' शरण आया आपकी हे मुरारी ॥

❁ अलङ्कार परिचय ❁

अलङ्कार— जिन उपकरणों से विकल, सुन्दरता आ जाय।
कविता कामिन का वही, अलङ्कार कहलाय ॥

अलङ्कारके भेद—चमत्कार जहँ शब्द का, सो शब्दालङ्कार।
'विकल' चमत्कृत अर्थ जहं, अर्था करो विचार ॥
चमत्कार शब्द अर्थ का, जिस कविता में होय।
सो उभयालङ्कार है, 'विकल' कहत सब कोय ॥

(१) अनुप्रास— 'विकल' एक ही शब्द जहं, आवत बारम्बार।
उदाहरण अनुप्रास का, तेग, तीर, तलवार ॥

छेकानुप्रास— वर्ण एक हो या अधिक, जब आवें दो बार।
वह छेका अनुप्रास ज्यों, विकल सकल संसार ॥

वृत्यानुप्रास— चाहे वर्ण अनेक हों, चाहे एक लखाय।
कई बार आवृति विकल, सो वृत्या कहलाय ॥
सबल सकल सज्जन सरल, सरस सुखद शुभ शान्त।
जय कविता जय विकल, कविता कामिन कान्त ॥

लाटानुप्रास— आवृति शब्दों की रहे, अर्थ एक ही होय।
सो लाटानुप्रास है, विकल कहत सब कोय॥
मन बस में जिसने किया, सब कुछ कानन माँहि।
विकल न मन बस में किया, क्या कुछ कानन माँहि॥

(२) यमक— शब्दावृति से शब्द का, अर्थ भिन्न हो जाय।
यमक इसी का नाम है, रहा विकल समझाय॥
हरि के मुख में हरि विकल, हरि, पहुंचों तंह आय।
हरि भागो हरि छोड़के, हरि में, हरि हर्षाय॥

(३) श्लेष— एक शब्द के अर्थ कई, हों प्रसंग अनुसार।
'विकल' उसी का नाम है, शुभ श्लेपालङ्कार॥
पानी रखते हैं विकल, जो है पानी दार।
पानी बिन बेकार सब, अश्व, मनुज, तलवार॥

उपमा— समता हो दो वस्तु में, विकल सो उपमा जान।
मुख सुन्दर सम चन्द्र के, उदाहरण यह मान॥

उपमा के अङ्ग—धर्म औ वाचक शब्द हो, उपमेय औ उपमान।
'विकल' अङ्ग यह चार तू, उपमा के घर ध्यान॥

उपमेय— जिसके बारे में कहो, सो उपमेय बखान।
उपमान— जिसके सम उपमेय हो, वहीं 'विकल' उपमान॥
साधारण धर्म— हो समता गुण दोप की, सो साधारण धर्म।
वाचक शब्द— वाचक शब्दों का विकल, समता करना कर्म॥

पूर्णोपमा— उपमा के चहुं अङ्ग हों, सो पूर्णोपमा जान।
शशि सम मुख सुन्दर विकल, उदाहरण यह मान॥

लुप्तोपमा— उपमा के चहुं अङ्ग में, लुप्त अङ्ग जहं कोय।
उदाहरण लुप्तोपमा, ज्यों शशि सम मुख होय॥

मालोपमा— एक जहाँ उपमेय हो, और अनेक उपमान।
मालोपमा जैसे विकल, मुख, विधु, कंज समान॥

अनन्वय— वस्तु एक ही हो जहां, उपमेय औ उपमान।
अनन्वय है ज्यों विकल, राम हि राम समान॥

रूपक— जहाँ 'विकल' उपमेय के, हो समान उपमान।
प्रिय का मुख है चन्द्रमा, रूपक की पहिचान॥

उत्प्रेक्षा— उपमेय में उपमान की, सम्भावना अनूप।
'विकल' उत्प्रेक्षा पीतपट, मानों दिनकर धूप॥

अपह्नुति— सत्य छिपा करके विकल, असत बताया जाय।
अपह्नुति ! है चन्द्रमा, सखि राधा मुख नाय॥

दृष्टान्त— मिलती जुलती एक से, विकल दूसरी बात।
भाव बिम्ब प्रति बिम्ब हों, सो दृष्टान्त कहात॥
जो जैसा वैसा विकल, बदले कहां विचार।
धोबी कपड़े को तके, जूता तके चमार॥

उदाहरण— एक बात कह कर प्रथम, फिर उसको समझाय।
उदाहरण जब दो विकल, उदाहरण कहलाय॥
जहाँ सुरक्षा हो विकल, फिर कैसा भयभीत।
जैसे–सम्पद सूम घर, बैठी गावे गीत॥

भ्रान्तिमान— समता भ्रम से वस्तु इक; लेत दूसरी जान।
भ्रान्ति मान की है विकल, यही एक पहिचान॥
सोते से जागे विकल, पटकें सूण्ड गणेश।
चूहा निज बिल जानके, जब कर गया प्रवेश॥

सन्देहालङ्कार— समता के कारण जहाँ, निश्चित न हों विचार।
मिथ्या भ्रम शंका विकल, सन्देहालङ्कार॥
कै सुरमें की तास कै, तार कोल की मात।
निशा अमा कै पूस की, भैंस 'विकल' पगुरात॥

अन्योक्ति— प्रस्तुत का वर्णन न कर, विकल अप्रस्तुत बात।
अर्थ लक्ष्य करदे प्रकट, सो अन्योक्ति कहात॥
कुछ भी हो चाहे विकल, भल भूखा मर जाय।
कभी न छोड़े आन को, सिंह न झूठा खाय॥

दग्धाक्षर— झ, ह, भ म, र, ष यह अक्षर अशुभ है इनको छंद के आदि में नहीं रखते किन्तु देव स्तुति में रख सकते हैं।

❀ हिन्दी संस्थाओं का परिचय ❀

(१) नागरी प्रचारिणी सभा काशी--इस संस्था की स्थापना सन् १८०३ ई० को डॉ० श्यामसुन्दरदास, पं० रामनारायण मिश्र तथा ठाकुर शिवकुमार जी के सहयोग से हुई थी। हिन्दी भाषा का प्रचार, प्राचीन हस्त लिखित साहित्य की खोज तथा प्रकाशन ही इस संस्था का मुख्य उद्देश्य है। इसी संस्था के अन्तर्गत एक विशाल 'कला भवन' भी है।

(२) हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग--यह संस्था सन् १६१० ई० स्थापित हुई थी। इस संस्था की ओर से प्रति वर्ष (भारत सरकार से मान्यता प्राप्त) वहुत सी परिक्षायें होती हैं। सम्मेलन का एक विशाल संग्रहालय है तथा 'सम्मेलन पत्रिका' प्रकाशित होती है।

(३) नागरी प्रचारिणी सभा आगरा--यह संस्था १६१० ई० में स्थापित हुई थी सभा का विशाल भवन तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन की परिक्षाओं का एक विद्यालय भी है।

(४) मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति इन्दौर--यह संस्था सन् १६१५ ई० को स्थापित हुई थी। साहित्य सम्मेलन की परीक्षाओं का विद्यालय भी है तथा 'वीणा' नामक पत्रिका प्रकाशित होती हैं।

(५) राष्ट्र भाषा प्रचार समिति वर्धा--यह संस्था सन् १६३६ ई० में स्थापित हुई थी। इसी संस्था के अन्तर्गत राष्ट्रभाषा मन्दिर में हिन्दी के प्रचारक तैयार कराये जाते हैं। हिन्दी न जानने वालों के लिये इस संस्था द्वारा (भारत सरकार से मान्यता प्राप्त) कई परिक्षायें भी होती हैं तथा 'राष्ट्र भारती' नामक पत्र भी निकलता है।

(६) साहित्य सदन (आबोहर)--यह एक छोटा सा पुस्तकालय था अब इस संस्था के अन्तर्गत एक संग्रहालय है तथा कई पाठशालायें भी चलती है और यह संस्था साहित्य सम्मेलन में ही मिल गई है।

(७) दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा (हैदराबाद)--दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार के लिये प्रयत्नशील इस संस्था की वहुत सी शाखायें हैं। कई पुस्तकालय, वाचनालय तथा विद्यालय भी चलते हैं।

(८) देवघर विद्यापीठ (देवघर)–इस संस्था के द्वारा भी साहित्य सम्मेलन की भांति (भारत सरकार से मान्यता प्राप्त) कई परिक्षायें होती हैं। सभा का वाचनालय, पुस्तकालय तथा विद्यालय भी हैं।

(९) वीरेन्द्र केशव साहित्य समिति (टीकमगढ़)––यह समिति सन् १६३० ई० में डॉ० श्यामबिहारी मिश्र, श्री गौरीशङ्कर द्विवेदी 'शंकर' के प्रयत्न से स्थापित हुई थी। दो हजार रुपये का देव पुरुष्कार ओरछा नरेश की ओर से प्रतिवर्ष दिया जाता था।

(१०) राजस्थान विश्व विद्यापीठ (उदयपुर)—महान् कर्मठ हठ-योगी व्यक्ति श्री० जनार्दन राय नागर द्वारा स्थापित इस संस्था के अन्तर्गत हिन्दी प्रचार के लिये, विद्यापीठ, वाचनालय, पुस्तकालय, शोध कार्य, पाठशालायें, तथा प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र अनेकों स्थानों पर चलते हैं।

(११) कुमार साहित्य परिषद् (जोधपुर)—श्री नेमीचन्द जैन 'भावुक' द्वारा स्थापित इस संस्था का मुख्य उद्देश्य नवयुवकों के हृदय में हिन्दी के प्रति अनुराग उत्पन्न कराना है। परिषद् प्रगति के पथ पर है।

अर्थ लिखना–अधिकतर परीक्षाओं ने इस प्रकार से प्रश्न आया करते हैं कि-निम्न लिखित गद्य अथवा पद्य की व्याख्या करो, अनुवाद करो, स्पष्टार्थ लिखो सरलार्थ लिखो, समझा कर लिखो, भाषार्थ लिखो, तात्पर्य लिखो, सारांश लिखो, संक्षेपार्थ लिखो, सारार्थ लिखो आदि।

भाषार्थ, सारांश, तात्पर्य, सारार्थ, आशय, मतलब, अभिप्राय इन सब शब्दों का एक ही अर्थ है। इस प्रकार के अर्थ लिखते समय शब्दों की ओर कम और भाव की ओर अधिक ध्यान दीजिये।

स्पष्टार्थ, सरलार्थ, खोलकर लिखो, समझा कर लिखो, अनुवाद करो इन सब का भी एक ही अर्थ है। गद्य तथा पद्य को सरल गद्य में बदलदो।

व्याख्या–किसी गद्य अथवा पद्य का प्रसंग, अन्तर्कथा, रस, गुण, दोष आदि का विवेचन तथा टीका टिप्पणी करके विस्तार पूर्वक अर्थ।

अर्थ–किसी के आशय को इस प्रकार की सरल भाषा में कह देना कि सुनने वाला उसे ठीक-ठीक समझ जाय, वही अर्थ कहाता है।

❀ चेतक शतक के कुछ छन्द ❀

राणा को निहार हुआ हर्षित कनौती फेर, मन की उमंग मन सीमा तजने लगी। देख के छबीला गर्वीला स्वामि भक्त आप, लाज से लजीली स्वामि भक्ति लजने लगी ॥ जुड़ आई जोगनि जमाति अप ने ही आप, काली महाकाली रण साज सजने लगी। चेतक पै जीन रखते ही भव्य भारती की, 'विकल' नवीव मृदु वीणा वजने लगी ॥१॥

एक दिन सहित कुटुम्ब शिव शैल पर, बैठे देखते थे नभ कितना विशाल है। 'विकल' गोधूलि मध्य लख धुंधला सा चन्द्र, उठी उमा अर्घ देने लगी उसी काल है ॥ शंकर को ऐसी हंसी आई हंसते ही रहे, बोली अरी भोली तूने क्या किया कमाल है। आज तो अमा है उमा! कैसी दूज कैसा चन्द्र, दौड़ रहा चेतक ये उसकी तनाल है ॥२॥

प्रात उठते ही ध्यान किसी का लगाता हुआ, लक्ष्य के समक्ष शीश अपना झुकाता था। ताप शीत वरसात भूख प्यास कुछ भी हो, तरुण तपस्वी सम जीवन विताता था ॥ विकल प्रताप से प्रतापी को विठाये पीठ, फूला न समाता रण कौशल दिखाता था। एक वलि वेदी का न द्विवेदी का त्रिवेदी का न, चेतक चतुरवेदी चारों वेद ज्ञाता था ॥३॥

दम्भी भाग जाते देख चेतक को चेतक भी, जीत अभिमान का महान गढ़ लेता था। सामने जो आता उसे पल में गिराता और, कितनों के प्राण छातियों पै चढ़ लेता था ॥ खेलता खिलाड़ी दाव पेच काट पैंतरे को, पीछे हट जाता कभी आगे वढ़ लेता था। मारता उसी को होती जिसको कजा की रजा, मुगलों के मस्तक की रेख पढ़ लेता था ॥४॥

देखी पड़ी वड़ी खोपड़ी तो वड़ा हींस पड़ा, आप हुआ मस्त फिर अपनी ही चाल का। जाती थी जहां भी वहीं जाता था हवा के साथ, कभी कभी अनुमान करता उछाल का। पास करने में पास गोल का तो मोल ही क्या, रेली अदुतीय थी तो हिट भी कमाल का। नहीं था अनाड़ी रहा सबसे अगाड़ी सदा, चेतक था या कोई खिलाड़ी फुटवाल का ॥५॥

ऐसा भरपूर या सरूर अपने में चूर, पीता स्वामिभक्ति का पुनीत प्रेम प्याला था। 'विकल' प्रताप के प्रताप से प्रतापवान, आप ही प्रताप

के प्रताप का उजाला था ॥ रणमध्य चाल थी कमाल चौकड़ी उड़ान, वह दिल वाला हर बात में निराला था। सभी ओर देख लेता सब के हृदय की थाह, चार ही क्या ! चेतक हजार आंख वाला था ॥६॥

बहुत को देख उसे आता था बहुत क्रोध, बहुत को बहुत ही थोड़ा कर देता था। जिसने भी अपने को समझा कि मैं हूं कुछ, मार्ग में उसी के खड़ा रोड़ा कर देता था। 'विकल' स्वाभाव ही से चाव बस काम एक भागते ही भागते भगोड़ा कर देता था। देर न लगाता मार पल में गिराना जहाँ, एक मरा पाया वहाँ जोड़ा कर देता था ॥७॥

ऐसा था हिसाबी बे हिसाबी की न करे बात, क्या है लेन देन समझाता चला जाता था। जोड़ना घटना, गुणा भाग हानि लाभ शेष, रोज रोज नामचा बनाता चला जाता था ॥ रुकता न, झुकता न भुगतान भुगता के, चुकता हिसाब नुकताता चला जाता था। राणा का मुनीम मानों चेतक महान चंट, रण मध्य खाता सा खताता चला जाता था ॥८॥

मारता किसी को चला छोड़ता किसी को चला, जान पाया कोई नहीं उसकी दया मया। भागते के पीछे कभी भागता नहीं था शेर, कायर के मारने में आती थी उसे हया। बड़े-बड़े अकिलों की होगई अकिल गुम, ऐसा नित कौतुक दिखाता रण में नया। चेतक यहाँ था अभी चेतक वहाँ था अभी, चेतक कहाँ का पल भर में कहाँ गया ॥९॥

पीछे लगे आ रहे थे 'विकल' मुगल चार, मारने का राणा को विचार ही निराला था। कितने ही दौड़े किन्तु छूटा साथ ठोकें माथ, हाथ कैसे आता पड़ा चेतक से पाला था ॥ आपको संभाला औ प्रताप को संभाला धन्य, लांघ गया नाला मारा एक ही उछाला था। चार टांग वाले खड़े खड़े देखते ही रहे, तीन टांग वाले ने कमाल कर डाला था ॥१०॥

देखते थे अपलक आंख मींच लेते कभी, उर में असीम वेदनायें सहने लगे। लिपट चिपट कभी डालते गले में बांह, आतुर, अधीर धीरता को दहने लगे ॥ चेतक का बार बार मुख चूमते थे आप, कान में न जाने कौन बात कहने लगे। 'विकल' निराले दिल वाले ऐसे रोये राणा, नाले के किनारे दो पनाले बहने लगे ॥११॥ (चेतक शतक से)

ललाच-एक लालची बनिया घर से, करने को रुजगार चला ।
उसे राह में कुये पै रोता, बच्चा रामकुमार मिला ॥
बोला बनिया ! कमर थपक कर, अरे यहाँ कैसे आया ।
और पड़ी ऐसी क्या आफत, जो तू इतना घबराया ॥
घर से अपने नोट चुरा कर, लाया था मैं आज चचा ।
झांक रहा था सभी गिर पड़े, हाय न मुझ पर एक बचा ॥
देखो अब भी तैर रहे हैं, किसी भांति लो इन्हें निकाल ।
बोला बनियां खबरदार तू ! बतलाना मत किसी को हाल ॥
बैठा रह चुपचाप ! न रोना ! बार बार समझाता हूं ।
तेरा सब सामान ! कुये से, अभी निकाले लाता हूं ॥
बांध लंगोटी धसा कुए में, लटका कर अपनी धोती ।
नहीं टालने से टलती है, होनी तो होकर होती ॥
नोट कहाँ थे बनिया निकला, आखिर में अपना सिर मार ।
उसका सब सब सामान उठाकर, घर को भागा रामकुमार ॥
बैठ कुये पर पीटे सर को, हाय राम ! तू अन्याई ।
कभी भूल कर 'विकल' न करना, लालच बुरी बला भाई ॥

मित्रता-किसी खेत में ढेले के ढिग, एक ढाक का पात पड़ा ।
मैं भी उन दोनों की बातें, सुनता था चुपचाप खड़ा ॥
बोला ढेला उठरे पत्ते, सुस्त पडा क्यों खेल करें ।
हंसी खुशी से रहें यही पर, आओ दोनों मेल करें ॥
बोला पत्ता ! अरे छली क्यों, देता है मुझ को धोका ।
अभी उड़ा कर ले जाये, जो आया वायु का झोका ॥
तब ढेले ने कहा ! बैठ जाऊंगा मैं तेरे ऊपर ।
हम दोनों को आंधी भी फिर, हटा सकेगी न तिल भर ॥
जब वर्षा हो मित्र ! हमारे, ऊपर तुम बैठे रहना ।
कष्ट सहूं मैं तेरे हित, तू मेरे हित सङ्कट सहना ॥
दोनों मिल कर रहे प्रेम से, न दुःख सुख में छोड़ा साथ ।
इसी तरह से तुम भी मित्रों, आओ 'विकल' मिलावें हाथ ॥

जगन्नाथ यादव द्वारा केशव आर्ट प्रिन्टर्स अजमेर में मुद्रित तथा
श्री माँ मन्दिर मण्डी धनौरा मुरादाबाद से रामावतार शर्मा द्वारा प्रकाशित